विश्व हिंदी समाचार

(विश्व हिंदी सचिवालय, मॉरीशस का त्रैमासिक प्रकाशन)

www.vishwahindi.com

वर्ष: 8 अंक: 29 मार्च, 2015

विश्व हिंदी सचिवालय मुख्यालय निर्माण का आधिकारिक शुभारंभ

भारत के प्रधान मंत्री व मॉरीशस के प्रधान मंत्री द्वारा शिक्षा मंत्री की उपस्थिति में स्मारक पट्ट का अनावरण

12 मार्च, 2015 को भारत गणराज्य के प्रधान मंत्री, महामहिम श्री नरेंद्र मोदी तथा मॉरीशस गणराज्य के प्रधान मंत्री, माननीय सर अनिरुद्ध जगन्नाथ, जी.सी.एस.के., के.सी.एम.जी., क्यू.सी. के कर कमलों द्वारा विश्व हिंदी सचिवालय मुख्यालय निर्माण का आधिकारिक शुभारंभ, फ़ेनिक्स, मॉरीशस में सफ़लतापूर्वक संपन्न हुआ। सामारोह का आयोजन मॉरीशस सरकार द्वारा किया गया था। *शेष पृ. 2-3*

विश्व हिंदी दिवस 2015: मॉरीशस

10 जनवरी, 2015 को विश्व हिंदी सचिवालय ने शिक्षा व मानव संसाधन, तृतीयक शिक्षा व वैज्ञानिक अनुसंधान मंत्रालय तथा भारतीय उच्चायोग के सौजन्य से विश्व हिंदी दिवस 2015 का भव्य आयोजन किया। मुख्य अतिथि, मॉरीशस गणराज्य के राष्ट्रपति, महामहिम श्री राजकेश्वर प्रयाग थे तथा अतिथि वक्ता के रूप में मास्को से प्रो. ल्युदमिला ख़ख़लोवा को आमंत्रित किया गया था। ***शेष पृ. 4-5***

विश्व हिंदी सचिवालय का 7वाँ आधिकारिक कार्यारंभ दिवस

11 फ़रवरी, 2015 को विश्व हिंदी सचिवालय ने शिक्षा एवं मानव संसाधन, तृतीयक शिक्षा व वैज्ञानिक अनुसंधान मंत्रालय तथा भारतीय उच्चायोग के सौजन्य से अपने आधिकारिक कार्यारंभ की 7वीं वर्षगांठ मनाई। मुख्य अतिथि के रूप में मॉरीशस के कला व संस्कृति मंत्री, माननीय श्री सांताराम बाबू तथा अतिथि वक्ता के रूप में श्रीमती चित्रा मुद्गल उपस्थित रहे। ***शेष पृ. 9***

विश्व हिंदी दिवस 2015: विश्वभर में

10 जनवरी, 1975 को नागपुर में हुए प्रथम विश्व हिंदी सम्मेलन की स्मृति में तथा विश्व भर में हिंदी के प्रचार-प्रसार हेतु विश्व के कोने-कोने में विश्व हिंदी दिवस एक उत्सव के रूप में मनाया जाने लगा है। इस वर्ष भी विश्व के कोने-कोने में विश्व हिंदी दिवस भव्य रूप से मनाया गया। इस अवसर पर विश्व भर से प्राप्त आयोजन की सूचनाएँ पृ. *6-7-8* ***पर पढ़ें।***

आगे पढ़ें:

- केनरा बैंक में इंटरनेट बैंकिंग सुविधा हिंदी में भी उपलब्ध — पृ. 11
- 'शब्दनगरी' का औपचारिक लोकार्पण — पृ. 11
- नई दिल्ली में 23वाँ विश्व पुस्तक मेला — पृ. 11
- नई दिल्ली में रामायण पर केंद्रित पुस्तकों का लोकार्पण — पृ. 12
- श्री बालेंदु शर्मा दाधीच व डॉ. अशोक चक्रधर हुए सम्मानित — पृ. 13
- श्रद्धांजलि : डॉ. कृष्णदत्त पालीवाल, श्री अवध नारायण मुद्गल, प्रो. रविकान्त दुबे, श्रीमती सलमा ज़ैदी, श्री विजय मोहन सिंह — पृ. 15

ISSN 1694-2485

विश्व हिंदी सचिवालय मुख्यालय निर्माण का आधिकारिक शुभारंभ

दोनों देशों के बीच गहन आत्मीय संबंधों का एक और प्रतीक : विश्व हिंदी सचिवालय

12 मार्च, 2015 को भारत गणराज्य के प्रधान मंत्री, महामहिम श्री नरेंद्र मोदी तथा मॉरीशस गणराज्य के प्रधान मंत्री, माननीय सर अनिरुद्ध जनन्नाथ, जी.सी.एस.के., के.सी.एम.जी., क्यू.सी. के कर कमलों द्वारा विश्व हिंदी सचिवालय मुख्यालय निर्माण का आधिकारिक शुभारंभ, फ़ेनिक्स, मॉरीशस में सफ़लतापूर्वक संपन्न हुआ। सामारोह का आयोजन मॉरीशस सरकार द्वारा किया गया था।

अवसर पर शिक्षा व मानव संसाधन, तृतीयक शिक्षा व वैज्ञानिक अनुसंधान मंत्री माननीया श्रीमती लीला देवी दुखन-लछुमन व मॉरीशस सरकार के अन्य अनेक माननीय मंत्रीगण तथा मंत्रालयों के स्थायी सचिव व अधिकारीगण, मॉरीशस के हिंदी विद्वान, साहित्यकार, लेखक, शैक्षणिक, प्रचारक, प्राध्यापक व छात्र तथा हिंदी प्रेमियों ने समारोह की शोभा बढ़ाई। महामहिम मोदी जी के साथ आई हुई प्रतिनिधि मंडल में भारतीय पक्ष की ओर से भारतीय उच्चायोग व उच्चायोग के अधिकारीगण, भारत सरकार के मंत्रालयों के अधिकारीगण व पत्रकार भी समारोह में उपस्थित रहे।

भारत गणराज्य के प्रधान मंत्री, महामहिम श्री नरेंद्र मोदी

इस शुभावसर पर भारत गणराज्य के प्रधान मंत्री, महामहिम श्री नरेंद्र मोदी का वक्तव्य विश्व हिंदी सचिवालय तथा मॉरीशस की जनता के लिए अत्यन्त प्रभावशाली व प्रेरणादायक रहा। उन्होंने शुरू करते हुए कहा ***एक प्रकार से 1.2 मिलियन के देश को 1.2 बिलियन का देश गले लगाने आया है।*** सर जगन्नाथ जी के शब्दों को उद्धृत करते हुए उन्होंने कहा कि ***ये लघु भारत शब्द सुनते ही पूरे तन-मन में एक वाइब्रेशन की अनुभूति होती है, एक अपनेपन की अनुभूति होती है।***

आगे उन्होंने यह इच्छा व्यक्त की कि सचिवालय के मुख्यालय निर्माण के आधिकारिक शुभारंभ के पश्चात इस कार्य में बिल्कुल देरी न हो – ***आज जिसकी शुरूआत हो, अभी तय कर लें कि इतनी तारीख को उसका उद्घाटन हो जाए।***

हिंदी भाषा के प्रचार व उन्नयन में मॉरीशस के योगदान का उल्लेख करते हुए माननीय मोदी जी ने कहा ***मॉरीशस ने हिंदी साहित्य की बहुत बड़ी सेवा की है। सार्क देशों में हिंदी भाषा के प्रति प्रेम रहा है। अनेक भाषा-भाषी लोगों ने हिंदी भाषा को सीखा है। दुनिया की अनेक युनिवर्सिटीज़ में हिंदी सिखाई जाती है। कई पुस्तकों का हिंदी में अनुवाद हुआ है। कई भाषाओं की किताबों का अनुवाद हूआ है। लेकिन जैसे मूर्धन्य साहित्यकार दिनकर जी कहते थे कि मॉरीशस अकेला एक ऐसा देश है जिसका उसका अपना हिंदी साहित्य है। ये मैं मानता हूँ, बहुत बड़ी बात है।*** 2015 के प्रवासी भारतीय दिवस का उदाहरण लेते हुए भी उन्होंने मॉरीशस के हिंदी साहित्य की प्रशंसा की। उन्होंने कहा ***दुनिया भर में फैले हुए भारतीयों ने जो कुछ भी रचनाएँ की हैं, अलग-अलग भाषाओं में की हैं, उसकी प्रदर्शनी थी। और आज गर्व से कहता हूँ कि विश्व भर में फैले हुए भारतीयों के द्वारा लिखे गए साहित्य की इस प्रदर्शनी में डेढ़ सौ से ज़्यादा पुस्तकें मॉरीशस की थीं। यानि यहाँ पर हिंदी भाषा को इतना प्यार किया गया है, उसका इतना लालन-पालन किया गया है, उसको इतना दुलार मिला है, शायद कभी-कभी हिंदुस्तान के भी कुछ इलाके होंगे जहाँ इतना दुलार नहीं मिला होगा जितना मॉरीशस में मिला है।***

मॉरीशसीय हिंदी साहित्य तथा हिंदी भाषा की प्रशंसा करते हुए उन्होंने कहा ***मैं मानता हूँ कि मॉरीशस में जो हिंदी साहित्य लिखा गया है, वो कलम से निकलने वाली स्याही से नहीं लिखा गया है। मॉरीशस में जो साहित्य लिखा गया है, उस कलम से, यहाँ के श्रमिकों के पसीने की बूँद से लिखा गया है। मॉरीशस का जो हिंदी साहित्य है, उसमें यहाँ के पसीने की महक है। और वो महक आने वाले दिनों में साहित्य को और नया सामर्थ्य देगी।***

उन्होंने यह इच्छा भी व्यक्त की कि जो सचिवालय बन रहा है, वहाँ टेक्नॉलॉजी का भी भरपूर उपयोग हो।

अपने वक्तव्य को समाप्त करते हुए उन्होंने कहा ***यह मेरे लिए बड़ा गर्व का विषय है कि मॉरीशस की धरती पर विश्व हिंदी सचिवालय के नए भवन का निर्माण हो रहा है। भाषा प्रेमियों के***

समारोह में उपस्थित माननीय मंत्रीगण, मंत्रालयों के अधिकारीगण व गणमान्य अतिथि

मॉरीशस गणराज्य के प्रधान मंत्री, माननीय सर अनिरुद्ध जगन्नाथ, जी.सी.एस.के., के.सी.एम.जी., क्यू.सी.

लिए, हिंदी भाषा प्रेमियों के लिए, भारत प्रेमियों के लिए और महान विरासत जिस साहित्य के भीतर नवपल्लवित होती रही है, उस महान विरासत के साथ विश्व को जोड़ने का जो प्रयास हो रहा है, उसको मैं बहुत-बहुत शुभकामनाएँ देता हूँ।

मॉरीशस गणराज्य के प्रधान मंत्री, माननीय सर अनिरुद्ध जनन्नाथ, जी.सी.एस.के., के.सी.एम.जी., क्यू.सी. ने हर्ष के साथ कहा कि ***आज का दिन भारत और मॉरीशस की दोस्ती के लिए, हिंदी भाषा के लिए और हिंदी की दुनिया में तथा भारत सहित समस्त हिंदी प्रेमियों के लिए एक ऐतिहासिक दिन है।... मॉरीशस और भारत के संबंध हर दृष्टि से बहुत ख़ास हैं। इसलिए कि ये संबंध व्यापार का, राजनीति का और डिप्लोमेसी का तो है ही लेकिन उससे बढ़कर यह संबध दिल का है। हमारे पूर्वजों का इतिहास और उनसे मिली हुई सभ्यता और संस्कृति, हमारे दिलों को जोड़ता है।***

आगे भाषा के महत्व के साथ-साथ मॉरीशस के इतिहास, हमारे पूर्वजों के संघर्ष को याद करते हुए उन्होंने कहा कि ***हिंदी भाषा इसी संस्कृति का बहुत ही अहम हिस्सा है। भारतीय भाषाएँ मॉरीशस की सांस्कृतिक पहचान के अटूट हिस्से हैं ... इतिहास के हिस्से हैं। साथ ही ये हमारे भविष्य के लिए भी बहुत ही महत्वपूर्ण हैं। इन भाषाओं के महत्व को जानते हुए ही, मॉरीशस ने हमेशा से सभी भारतीय भाषाओं की रक्षा और प्रचार के लिए खूब मेहनत की है। हमारे पूर्वजों ने जब मॉरीशस में अपने अधिकारों के लिए, अपने देश की आज़ादी के लिए लड़ाई की तब उस लड़ाई में भाषा की लड़ाई भी शामिल थी।***

आगे उन्होंने कहा कि उन्हें गर्व है कि इतने कम समय में सचिवालय ने अपने काम से हिंदी की दुनिया में एक खास जगह बना दी है। ***मुझे पूरा विश्वास है कि हेडक्वॉटर्स के बनने से सचिवाल्य को नई ऊँचाई तक पहुँचने की शक्ति मिलेगी और दोनों के सहयोग से ये अपने उद्देश्य को पूरा कर पाएगा।*** अंत में उन्होंने हिंदी को राष्ट्रसंघ में न्यायोचित स्थान दिलाने के भारतीय

श्री गंगाधरसिंह सुखलाल, कार्यवाहक महासचिव, विश्व हिंदी सचिवालय

प्रयासों के बारे में विश्वास दिलाया – ***मॉरीशस की जनता और सरकार यह वचन देती है कि हिंदी को उस ऊँचाई पर पहुँचाने के लिए जब भी आप आवाज़ उठाएँगे... हम आपके साथ होंगे।***

कार्यक्रम का शुभारंभ करते हुए विश्व हिंदी सचिवालय के कार्यवाहक महासचिव श्री गंगाधरसिंह सुखलाल ने मुख्य अतिथि व सभागार में उपस्थित सभी हिंदी प्रेमियों का हार्दिक स्वागत किया। श्री सुखलाल ने विश्व हिंदी सचिवालय के 7 वर्षों के कार्यकाल व उपलब्धियों का ब्यौरा दिया साथ ही सचिवालय के कार्यों, गतिविधियों व उपलब्धियों पर सुन्दर वीडियो प्रस्तुति हुई।

महामहिम श्री नरेंद्र मोदी तथा सर अनिरुद्ध जगन्नाथ ने स्मारक पट्ट का अनावरण करते हुए विश्व हिंदी सचिवालय के मुख्यालय निर्माण का आधिकारिक शुभारंभ किया।

इंदिरा गांधी भारतीय सांस्कृतिक केंद्र व महात्मा गांधी संस्थान के नृत्य कलाकारों द्वारा प्रस्तुति

अवसर पर महात्मा गांधी संस्थान तथा इंदिरा गांधी भारतीय सांस्कृतिक केंद्र के कलाकारों द्वारा महाकवि जयशंकर प्रसाद की '***अरुण यह मधुमय देश हमारा***' व प्रसिद्ध मॉरीशसीय कवि श्री सोमदत्त बखोरी की '***मॉरीशस की सृष्टि***' कविता पर आधारित एक संगीत व नृत्य प्रस्तुति भी हुई।

इंदिरा गांधी भारतीय सांस्कृतिक केंद्र व महात्मा गांधी संस्थान के गायक व संगीतकारों द्वारा प्रस्तुति

कार्यवाहक महासचिव श्री गंगाधरसिंह सुखलाल द्वारा धन्यवाद ज्ञापन के साथ ही कार्यक्रम संपन्न हुआ।

समारोह में उपस्थित गणमान्य अतिथि

विश्व हिंदी सचिवालय की रिपोर्ट

विश्व हिंदी दिवस 2015, मॉरीशस

मॉरीशस गणराज्य के राष्ट्रपति, महामहिम श्री राजकेश्वर प्रयाग, जी.सी.एस.के., जी.ओ.एस.के.

10 जनवरी, 2015 को विश्व हिंदी सचिवालय ने शिक्षा व मानव संसाधन, तृतीयक शिक्षा व वैज्ञानिक अनुसंधान मंत्रालय तथा भारतीय उच्चायोग के सौजन्य से फ़ेनिक्स स्थित इंदिरा गांधी भारतीय सांस्कृतिक केंद्र में विश्व हिंदी दिवस समारोह का भव्य आयोजन किया।

अतिथि वक्ता प्रो. ल्युदमिला ख़ख़लोवा, माननीया श्रीमती लीला देवी दुखन-लछुमन व महामहिम श्री राजकेश्वर प्रयाग

समारोह के मुख्य अतिथि, मॉरीशस गणराज्य के राष्ट्रपति, महामहिम श्री राजकेश्वर प्रयाग, जी.सी.एस.के, जी.ओ.एस.के. रहे। शिक्षा व मानव संसाधन, तृतीयक शिक्षा व वैज्ञानिक अनुसंधान मंत्री माननीया श्रीमती लीला देवी दुखन-लछुमन तथा भारतीय उच्चायुक्त महामहिम श्री अनूप कुमार मुद्गल तथा कला व संस्कृति मंत्री माननीय श्री सांताराम बाबू ने भी अपनी उपस्थिति से कार्यक्रम की शोभा बढ़ाई। सचिवालय ने इस वर्ष विश्व हिंदी दिवस के अवसर पर मॉरीशस के हिंदी समुदाय के समक्ष मास्को विश्वविद्यालय, रूस से आई हिंदी विद्वान एसोसिएट प्रोफ़ेसर ल्युदमिला ख़ख़लोवा को प्रस्तुत किया जिन्होंने 'रूस में हिंदी' पर वक्तव्य दिया।

महामहिम श्री राजकेश्वर प्रयाग, जी.सी.एस.के, जी.ओ.एस.के. ने सचिवालय को बधाई देते हुए उसकी उपलब्धियों की चर्चा की। साथ ही हिंदी भाषा के महत्व का उल्लेख करते हुए उन्होंने युवा पीढ़ी को हिंदी भाषा की ओर अग्रसर होने के लिए प्रोत्साहित किया। अपने वक्तव्य में अत्यन्त प्रभावशाली स्वर में उन्होंने कहा ***हमारे इतिहास में, आज तक एक भी ऐसा पड़ाव नहीं आया है जहाँ हिंदी ने ढाल बनकर हमारी रक्षा नहीं की है... जहाँ हिंदी ने बेड़ियाँ तोड़ने में हमारी सहायता नहीं की है... प्रगति और खुशहाली में हमारा सहारा बनकर हमारे साथ नहीं चली है।*** आगे उन्होंने बड़े-बड़े देशों में हिंदी के उन्नयन में व्यापारियों के आर्थिक योगदान का उल्लेख करते हुए यह भी कहा कि ***मैं आज देश के कॉर्पोरेट समाज से अनुरोध करूँगा कि वे भी पहचानें कि न केवल हिंदी बल्कि सभी भाषाएँ हमारे देश की प्रगति, खुशहाली, भारत जैसे देशों के निवेशकों के साथ हमारे संबंध के लिए कितना ज़रूरी है। इसलिए वे भी अन्य देशों के कॉर्पोरेट वर्ल्ड से सीख लेते हुए इन भाषाओं में निवेश करें।***

माननीया श्रीमती लीला देवी दुखन-लछुमन, शिक्षा व मानव संसाधन, तृतीयक शिक्षा व वैज्ञानिक अनुसंधान मंत्री ने सचिवालय के कार्यों की प्रशंसा करते हुए उसकी भावी योजनाओं में अपने मंत्रालय के सहयोग का आश्वासन दिया। साथ ही उन्होंने मॉरीशस की शिक्षा मंत्री होने के नाते देश के विकास में हिंदी के अध्ययन-अध्यापन पर ज़ोर दिया। उन्होंने यह भी कहा कि ***मॉरीशस में हिंदी भाषा का लम्बा इतिहास होना, दुनिया भर में जाने-माने लेखक होना, यहाँ की हिंदी शिक्षा का दुनिया भर में अच्छा नाम होना, यहाँ पर हिंदी के लिए तन-मन से काम करने वाले नेताओं और संस्थाओं का होना ... इन सभी की बदौलत ही आज दुनिया भर में भारत के बाद मॉरीशस को ही हिंदी के लिए मिसाल माना जाता है।***

महामहिम श्री अनूप कुमार मुद्गल, भारतीय उच्चायुक्त

महामहिम श्री अनूप कुमार मुद्गल, भारतीय उच्चायुक्त ने अवसर पर भारत गणराज्य के प्रधान मंत्री, महामहिम श्री नरेंद्र मोदी का संदेश पढ़कर सुनाया।

अपने वक्तव्य में महामहिम श्री मुद्गल ने अत्यन्त हर्ष के साथ कहा कि ***मैं जब भी किसी सम्मेलन में जाता हूँ 'मॉरीशस में' तो वहाँ जाकर एक बहुत ही खास, दिल को छू जाने वाली स्थिति, हमेशा पैदा हो जाती है।*** उन्होंने विभिन्न देशों में अपने कार्यानुभवों का उल्लेख करते हुए मॉरीशस में अपने सुखद अनुभव के बारे में भी बताया - ***जब मैं मॉरीशस आया, जगह-जगह हिंदी जानने वालों को, हिंदी को प्यार करने वालों को देखा लेकिन मॉरीशस की तो कुछ बात ही अलग है। यहाँ हिंदी ने अलग से अपनी एक पहचान बनाई है। मॉरीशस के लिए हिंदी कोई बाहर की भाषा नहीं है। मॉरीशस में हिंदी मॉरीशस की अपनी भाषा है। और इस वजह से जो मॉरीशस में भारतीयता, भारतीय संस्कृति और भारतीय भाषाओं की जो पहचान है, वो मॉरीशस की अपनी पहचान है।*** उन्होंने विश्व हिंदी सचिवालय के कार्यों की सराहना की तथा भावी योजनाओं के लिए शुभकामनाएँ दीं।

श्री गंगाधरसिंह सुखलाल, कार्यवाहक महासचिव, विश्व हिंदी सचिवालय

समारोह के आरंभ में सभी अतिथियों का स्वागत करते हुए सचिवालय के कार्यवाहक महासचिव, श्री गंगाधरसिंह सुखलाल ने विशेष रूप से एक पावर पॉइंट प्रस्तुति से सचिवालय द्वारा आयोजित 2014 की सभी गतिविधियों का सुन्दर प्रदर्शन किया तथा भावी योजनाओं का भी संक्षिप्त परिचय दिया। श्री सुखलाल ने सचिवालय के सफ़ल आयोजनों में सभी सहयोगी संस्थाओं के प्रति आभार व्यक्त किया। अवसर पर उन्होंने विश्व हिंदी दिवस के उपलक्ष्य में आयोजित अंतरराष्ट्रीय लघु-कथा प्रतियोगिता के विजेताओं की घोषणा भी की।

मंच संचालन श्री विनय गुदारी तथा सुश्री अंजलि चिंतामणी ने किया।

अंतरराष्ट्रीय हिंदी लघुकथा प्रतियोगिता

विश्व हिंदी दिवस 2015 के उपलक्ष्य में सचिवालय ने वर्ष 2014 में एक **अंतरराष्ट्रीय हिंदी लघुकथा प्रतियोगिता** का आयोजन किया था। इस

बाएँ से: श्री विनय गुदारी (पुरस्कार विजेता), माननीय श्री सांताराम बाबू, प्रो. ल्युदमिला ख़ख़लोवा, माननीया श्रीमती लीला देवी दुखन–लछुमन, महामहिम श्री राजकेश्वर प्रयाग, महामहिम श्री अनूप कुमार मुद्‌गल, डॉ. अलका धनपत (पुरस्कार विजेता), श्री अरविंदसिंह नेकितसिंह (पुरस्कार विजेता), श्री वशिष्ठ कुमार झमन (पुरस्कार विजेता)

प्रतियोगिता को पांच भौगोलिक क्षेत्रों में बांटा गया था 1. अफ़्रीका व मध्य पूर्व, 2. अमेरिका, 3. एशिया व ऑस्ट्रेलिया (भारत के अतिरिक्त), 4. युरोप, 5. भारत। प्रत्येक क्षेत्र से बड़ी संख्या में लोगों ने प्रतियोगिता में भाग लिया। समारोह में मॉरीशस के पांच विजेताओं ***(प्रथम– श्री राज हीरामन व श्री विनय गुदारी; द्वितीय– डॉ. श्रीमती अलका धनपत, श्री वशिष्ठ कुमार झमन व श्री अरविंदसिंह नेकितसिंह)*** को पुरस्कार राशि तथा प्रमाण पत्र भेंट किया गया।

लोकार्पण: विश्व हिंदी पत्रिका का 6ठा अंक

बाएँ से: श्री सत्यदेव टेंगर, श्री अजामिल माताबदल, माननीय श्री सांताराम बाबू, प्रो. ल्युदमिला ख़ख़लोवा, माननीया श्रीमती लीला देवी दुखन–लछुमन, महामहिम श्री राजकेश्वर प्रयाग, महामहिम श्री अनूप कुमार मुद्‌गल, श्री गंगाधरसिंह सुखलाल

इस वर्ष सचिवालय ने अपने वार्षिक प्रकाशन *विश्व हिंदी पत्रिका* के 6ठे अंक (मुद्रित व वेब प्रारूप) का लोकार्पण किया। लोकार्पण महामहिम शी राजकेश्वर प्रयाग के हाथों हुआ। इस अंक में विभिन्न देशों से प्राप्त 35 लेख प्रस्तुत किए गए हैं। पत्रिका में विविध विषयों पर आधारित शोध लेख प्रकाशित हुए हैं जैसे हिंदी का अंतरराष्ट्रीय स्वरूप, क्षेत्र व आयाम, हिंदी शिक्षण, हिंदी तथा सूचना-संचार प्रौद्योगिकी, हिंदी के पथप्रदर्शक, प्रवासी देशों में हिंदी साहित्य इत्यादि। यह अंक सचिवालय के वेबसाइट "http:// www.vishwahindi.com" www.vishwahindi.com पर भी उपलब्ध है।

सांस्कृतिक कार्यक्रम

इंदिरा गांधी भारतीय सांस्कृतिक केंद्र के नृत्य कलाकारों द्वारा प्रस्तुति

इस वर्ष सचिवालय ने हिंदी प्रेमियों के समक्ष इंदिरा गांधी भारतीय सांस्कृतिक केंद्र के कलाकारों द्वारा महाकवि जयशंकर प्रसाद की कविता *'बीती विभावरी जाग री!'* पर आधारित संगीत व नृत्य तथा मॉरीशस के प्रसिद्ध अकादमी ऑफ़ परफ़ोमिंग आर्ट्स द्वारा *'एक कुत्ते की मौत'* नाटक प्रस्तुत किया।

इंदिरा गांधी भारतीय सांस्कृतिक केंद्र के संगीतकारों द्वारा प्रस्तुति

'बीती विभावरी जाग री!' स्वतंत्रता-पूर्व छायावादी युग के महाकवि जयशंकर प्रसाद की प्रसिद्ध कविता है जिसमें परतंत्रता की बेड़ियों में जकड़ी भारतीय जनता के सामने प्रकृति का सहारा लेते हुए जागरण का बिगुल बजाया गया है। यह कविता मॉरीशस के हिंदी प्रेमियों के बीच अत्यन्त प्रसिद्ध है।

अकादमी ऑफ़ पर्फ़ोमिंग आर्ट्स के कलाकारों द्वारा प्रस्तुति

'एक कुत्ते की मौत' एक हिंदी-भोजपुरी नाटक है। मार्क हेडन के उपन्यास *The Curious Incident of the Dog in the Night Time* से प्रेरित यह नाटक एक कुत्ते की मौत के रहस्य की जांच के बहाने वर्तमान समाज में मनुष्य की अनैतिकता के कारण पारिवारिक मूल्यों, संबंधों, विश्वास और बच्चों के भविष्य की हत्या का रहस्य खोलता है।

श्रीमती प्रयाग, माननीया श्रीमती दुखन–लछुमन, श्रीमती प्रयाग, श्रीमती बाबू व श्रीमती सुखलाल के साथ इंदिरा गांधी भारतीय सांस्कृतिक केंद्र व अकादमी ऑफ़ पर्फ़ोमिंग आर्ट्स के कलाकार

अन्य गतिविधियाँ

9 जनवरी, 2015 को महात्मा गांधी संस्थान के सुब्रमण्यं भारती सभागार में संस्था के शिक्षकों, छात्रों व प्राध्यापकों के लिए प्रो. ख़ख़लोवा के साथ एक शैक्षणिक सत्र का आयोजन किया गया।

12 जनवरी, 2015 को प्रो. ख़ख़लोवा ने मॉरीशस गणराज्य के राष्ट्रपति, महामहिम श्री राजकेश्वर प्रयाग, शिक्षा व मानव संसाधन, तृतीयक शिक्षा व वैज्ञानिक अनुसंधान मंत्री, माननीया श्रीमती लीला देवी दुखन-लछुमन तथा भारतीय उच्चायुक्त, महामहिम श्री अनूप कुमार मुद्‌गल के साथ औपचारिक भेंट की। शिक्षा व मानव संसाधन, तृतीयक शिक्षा व वैज्ञानिक अनुसंधान मंत्री के साथ भेंट के दौरान मॉरीशस और रूस के बीच शिक्षण के क्षेत्र में संबंधों को और भी गहरा करने की संभावनाों पर भी चर्चा हुई।

समारोह में उपस्थित गणमान्य अतिथि

विश्व हिंदी दिवस 2015 विश्व भर में

भारत

दीप प्रज्ज्वलन करते हुए माननीया श्रीमती सुषमा स्वराज व अन्य विशेष अतिथि

नई दिल्ली

भारत के विदेश मंत्रालय द्वारा 10 जनवरी, 2015 को नई दिल्ली के अशोक होटल में विश्व हिंदी दिवस का भव्य आयोजन किया गया। माननीया विदेश मंत्री, श्रीमती सुषमा स्वराज इस समारोह की मुख्य अतिथि रहीं। मॉरीशस के उप-प्रधानमंत्री, माननीय श्री शौकतअली सुधन भी विशेष रूप से उपस्थित थे। अन्य प्रतिभागियों में संसद के माननीय सदस्यगण, विभिन्न मंत्रालय के वरिष्ठ अधिकारीगण, विभिन्न देशों के राजदूत, उच्चायुक्त व वरिष्ठ राजनयिक सहित प्रख्यात हिंदी विद्वान तथा साहित्यकार आदि भी शामिल रहे। कार्यक्रम का शुभारंभ सचिव, श्री अनिल वाधवा द्वारा माननीया विदेश मंत्री एवं उप-प्रधानमंत्री का पुष्प गुच्छ से स्वागत द्वारा हुआ। भारत में हिंदी का अध्ययन कर रहे विदेशी छात्रों द्वारा एक रंगारंग सांस्कृतिक कार्यक्रम की प्रस्तुति भी हुई। समारोह के अंत में मंत्रालय द्वारा आयोजित हिंदी निबंध प्रतियोगिता के विजेताओं को पुरस्कृत किया गया।

बेर सराय

बेर सराय, नई दिल्ली में ही विदेश मंत्रालय द्वारा विदेश सेवा संस्थान में विश्व हिंदी दिवस मनाया गया। माननीय विशेष सचिव श्री नवतेज सरना मुख्य अतिथि थे। इस उपलक्ष्य में हिंदी का अध्ययन कर रहे विदेशी छात्रों के लिए आयोजित प्रतियोगिता के विजेताओं को धनराशि व पुस्तक भेंट कर सम्मानित किया गया। केंद्रीय हिंदी संस्थान के छात्रों द्वारा प्रस्तुत सांस्कृतिक कार्यक्रम से समारोह की शोभा बढ़ी।

साभार : विदेश मंत्रालय, भारत सरकार वेबसाइट

केरल

हिंदी प्रेमी मंच, त्रिशूर द्वारा भव्य रूप से विश्व हिंदी दिवस, 2015 का आयोजन किया गया जिसमें कई हिंदी अध्यापक तथा अध्यापिकाओं ने उत्साहपूर्वक भाग लिया।

लखनऊ

विश्व हिंदी दिवस के उपलक्ष्य में भारतीय महिला बैंक द्वारा 10 जनवरी, 2015 को लखनऊ में एक संगोष्ठी तथा पुरस्कार समारोह का सफ़ल आयोजन किया गया।

मुंबई

बैंक ऑफ़ बड़ौदा के कॉर्पोरेट कार्यालय, मुंबई में 10 जनवरी, 2015 को विश्व हिंदी दिवस समारोह का आयोजन किया गया। इस अवसर पर मॉरीशस से आए हिंदी के मूर्धन्य विद्वान श्री राज हीरामन तथा भारतीय रिज़र्व बैंक के महाप्रबंधक डॉ. रमाकांत गुप्ता विशिष्ट अतिथि के रूप में उपस्थित थे। अध्यक्षता मुख्य महाप्रबंधक श्री मराठे ने की। समारोह के मुख्य अतिथि श्री राज हीरामन ने बताया कि मॉरीशस में हिंदी नोट की भाषा है, हिंदी वोट की भाषा है, हिंदी रोटी की भाषा है। उन्होंने कहा कि ***मैंने सारे संस्कार हिंदी से प्राप्त किए हैं।*** गांधी जी का उल्लेख करते हुए उन्होंने बताया कि जब वे मॉरीशस आए थे तो उन्होंने दो महत्वपूर्ण बातें बताई थीं - बच्चों को शिक्षित करो और बच्चों को राजनीति में आने के लिए प्रेरित करो। इन्हीं सलाह के कारण आज मॉरीशस में राजनीति के क्षेत्र में भारतवंशी मूल के लोग कार्यरत हैं।

इसके अलावा बैंक के 20 देशों में स्थित कार्यालयों यथा यू.एस.ए., यू.के., मॉरीशस, फिजी, ऑस्ट्रेलिया, न्यू ज़ीलैंड, दक्षिण अफ़्रीका, त्रिनिदाद एवं टोबैगो, गयाना, हाँगकाँग आदि में भी पहली बार विश्व हिंदी दिवस का आयोजन किया गया। मुंबई में समारोह का शुभारंभ श्री रवि कुमार अरोरा, महाप्रबंधक के स्वागत वक्तव्य से हुआ। उन्होंने सभी अतिथियों को पुस्तक व शॉल देकर सम्मानित किया। कार्यक्रम की रूपरेखा प्रस्तुत करते हुए सहायक महाप्रबंधक (राजभाषा) डॉ. जवाहर कर्नावट ने हिंदी के वैश्विक स्वरूप पर प्रकाश डाला। कार्यक्रम का संचालन वरिष्ठ प्रबंधक श्री पुनीत कुमार मिश्र ने किया एवं आभार प्रदर्शन मुख्य प्रबंधक श्री जयप्रकाश सौंखिया ने किया।

साभार : श्री जय प्रकाश सौंखिया

रायगढ़

महानदी कोल फ़ील्ड्स लिमिटेड में विश्व हिंदी दिवस मनाया गया। इस अवसर पर अध्यक्ष सह प्रबंध निदेशक ए.एन. सहाय एम.सी.एल. की अध्यक्षता में एक राजभाषा सेमिनार का आयोजन किया गया जिसमें एम.सी.एल. के निदेशक, तकनीकी संचालन ए.के. तिवारी, निदेशक कार्मिक पीसी पाणिग्रही अतिथि के रूप में उपस्थित थे। कार्यक्रम के अध्यक्ष ने हिंदी की प्रयोजनमूलकता एवं हिंदी से भारतीयों को स्वत: जुड़ने पर ज़ोर देते हुए कहा कि सच में अगर माना जाए तो हिंदी विश्व की सबसे अधिक बोली और समझी जाने वाली भाषाओं में से एक है। निदेशक, कार्मिक पीसी पाणिग्रही ने भी हिंदी को विश्व भाषा बनाने के लिए सभी को अपने स्तर से प्रयास करने की सलाह दी।

साभार : दैनिक भास्कर

विदेश

बर्लिन, जर्मनी

30 जनवरी, 2015 को भारतीय दूतावास, बर्लिन के संस्कृति विंग में विश्व हिंदी दिवस मनाया गया। श्री सेबास्चियाँ ड्रेयर की परिकल्पना से कार्यक्रम 'कवि संत मीराबाई' विषय पर आधारित रहा। श्रीमती सुशीला हक द्वारा भाषण एवं श्री अरीफ़ नक़वी व श्रीमती सयाशा बाला द्वारा कविता पठन भी हुआ।

साभार : बर्लिन ग्लोबल वेबसाइट

फ़्रैंकफ़र्ट, जर्मनी

16 मार्च, 2015 को फ़्रैंकफ़र्ट के भारतीय महावाणिज्यदूतावास में विश्व हिंदी दिवस मनाया गया। अवसर पर महावाणिज्यदूत श्री रवीश कुमार ने दूतावास द्वारा 'भारतीय संस्कृति का वैश्वीकरण' विषय पर आयोजित हिंदी निबंध प्रतियोगिता के विजेताओं एवं प्रतिभागियों को सम्मानित किया।

साभार : भारतीय महावाणिज्यदूतावास, फ़्रैंकफ़र्ट वेबसाइट

हैम्बर्ग, जर्मनी

14 जनवरी, 2015 को वाणिज्य दूतावास तथा हैम्बर्ग विश्वविद्यालय की एशिया-अफ़्रीका-इंस्टिट्यूट के सौजन्य से हैम्बर्ग विश्वविद्यालय के सभागार में विश्व हिंदी दिवस मनाया गया। समारोह का उद्घाटन मुख्य अतिथि, श्री मोहन राणा, उप वाणिज्य दूत, श्री दलबीर सिंह तथा भारतीय व तिब्बती शिक्षण विभाग के अध्यक्ष, प्रो. डॉ. माईकल ज़िमरमान द्वारा दीप प्रज्वलन से हुआ। इस उपलक्ष्य

विश्व हिंदी दिवस 2015 विश्व भर में

में भारतीय विद्या विभाग द्वारा हिंदी गान व संगीत प्रतियोगिता, छात्रों के भारत-अनुभव पर निबंध पठन, हिंदी में छात्रों द्वारा रंगमंचीयता, आदि अनेकानेक कार्यक्रम आयोजित हुए। समारोह में लगभग 80 प्रतिभागियों ने भाग लिया।

साभार : भारतीय महावाणिज्यदूतावास, हैम्बर्ग वेबसाइट

ब्रुनेई, दारुस्सलाम

भारतीय उच्चायोग, ब्रुनेई, दारुस्सलाम व इंडियन एसोसिएशन बेलाइत (आई.ए.बी.) के संयुक्त तत्वावधान में सीरिया के बी.सी.आर.सी. बॉलरूम में विश्व हिंदी दिवस का आयोजन किया गया। समारोह का शुभारंभ एसोसिएशन के प्रधान श्री देवराजन तथा ब्रुनेइ में भारतीय उच्चायुक्त, डॉ. अशोक कुमार अमरोही के वक्तव्य से हुआ। एक सांस्कृतिक कार्यक्रम भी संपन्न हुआ जिसमें लगभग 30 से अधिक बच्चों व वयस्कों ने हिंदी कविता पठन, वक्तव्य एवं संगीत में भाग लिया। समारोह में अताशे श्री वेंकटचेलम, प्रथम सचिव श्री ललित प्रसाद, द्वितीय सचिव श्री हरि गोविंदन, भारतीय दूतावास के अन्य सदस्य तथा इंडियन एसोसिएशन बेलाइत के सदस्य उपस्थित थे।

साभार : बोर्नियो बुलटिन

दोहा, क़तर

एम.ई.एस. भारतीय स्कूल, दोहा के हिंदी विभाग ने रंगारंग कार्यक्रमों तथा प्रस्तुतियों द्वारा भव्य रूप से विश्व हिंदी दिवस 2015 मनाया। लगभग 150 छात्रों ने उत्साहपूर्वक कार्यक्रमों में भाग लिया तथा हिंदी की महिमा का गान किया।

दोहा, क़तर के बिरला पब्लिक स्कूल में भी विश्व हिंदी दिवस का आयोजन किया गया। समारोह के अंतर्गत बिरला पब्लिक स्कूल के छात्रों द्वारा प्रहसन, नृत्य व गायन आदि विभिन्न सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन किया गया।

साभार : द पेनेंशुला प्लस व बिरला पब्लिक स्कूल

गयाना

बैंक ऑफ़ बड़ौदा, गयाना ने 10 जनवरी, 2015 को विश्व हिंदी दिवस के उपलक्ष्य में विश्व भर में हिंदी के महत्व को उजागर करने के लिए अपने रिजेंट स्ट्रीट कार्यालय में एक समारोह का आयोजन किया। बैंक ऑफ़ बड़ौदा के प्रबंध-निदेशक, श्री अमीत कुमार ने अपने उद्बोधन में कहा कि हिंदी ने लगभग 22 भाषाओं को जन्म दिया है और इन सभी का प्रयोग भारत में किया जाता है।गयाना हिंदी प्रचार सभा के प्रधान श्री बेनी सिंह ने अपने वक्तव्य में कहा कि उनका आजीवन लक्ष्य गयाना के चारों ओर हिंदी भाषा का प्रचार-प्रसार करना रहा है। उन्होंने यह आशा व्यक्त की कि जो अधिक प्रभावी हैं, वे भी सामने आकर हिंदी के क्षेत्र में कुछ ठोस कार्य करें। हिंदी के क्षेत्र में अपने महत्वपूर्ण योगदान के लिए श्री बेनी सिंह को 'मोज़ाइक ऑफ़ फ़ेथ - प्लेसज़ ऑफ़ वोर्शिप इन इंडिया' पुस्तक प्रदान कर सम्मानित किया गया।

साभार : गयाना टाइम्स

जापान

विश्व हिंदी दिवस के अवसर पर तोक्यो में हिंदी की गूँज रही। 29 जनवरी, 2015 को भारतीय दूतावास, तोक्यो ने विवेकानंद सांस्कृतिक केंद्र के सभागार में विश्व हिंदी दिवस मनाया जिसमें तोक्यो युनिवर्सिटी ऑफ़ फ़ॉरेन स्टडीज़ के प्रो. ताकेशी फ़ुजिइ सहित कई विद्वान उपस्थित थे।

16 जनवरी, 2015 को ओसाका-कोबे के महावाणिज्य दूतावास में भी भव्य रूप से विश्व हिंदी दिवस मनाया गया।

साभार : भारतीय दूतावास, तोक्यो व भारतीय महावाणिज्यदूतावास, ओसाका वेबसाइट

लंदन

विश्व हिंदी दिवस, 2015 के उपलक्ष्य में भारतीय उच्चायोग, लंदन में एक समारोह का आयोजन किया गया। इंडियन हाउस के गांधी हॉल में इस अवसर पर उच्चायोग के सभी अधिकारी और कर्मचारी उत्साह के साथ शामिल हुए। सर्वप्रथम अताशे ने विश्व हिंदी दिवस की पृष्ठभूमि की जानकारी देते हुए इसके ऐतिहासिक एवं सम-सामयिक महत्व पर प्रकाश डाला। तदुपरांत भारतीय उच्चायुक्त श्री रंजन मथाई ने माननीय प्रधान मंत्री जी का संदेश पढ़ा तथा उपस्थित सभी अतिथियों से वैश्विक स्तर पर हिंदी के प्रचार-प्रसार में सम्मिलित होने का आह्वान किया जिससे कि हिंदी विश्व पटल पर स्थापित हो सके।

विश्व हिंदी दिवस, 2015 के अपलक्ष्य में 5 दिसंबर, 2014 को भारतीय उच्चायोग, लंदन द्वारा यू.के. हिंदी सम्मान समारोह का आयोजन भी किया गया जिसमें हिंदी भाषा के प्रचार-प्रसार में शामिल लोगों तथा संस्थाओं को सम्मानित किया गया : सुश्री जे. आस्टिन व सुश्री देवीना ऋषि को जॉन गिलक्रिस्ट यू.के. हिंदी शिक्षण सम्मान; श्री सोहन राही व श्रीमती कविता वाचक्नवी को डॉ. हरिवंश राय बच्चन यू.के. हिंदी साहित्य सम्मान; श्री रवि शर्मा व सुश्री शिखा वार्ष्णेय को आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी पत्रकारिता सम्मान; काव्य धारा व वातायन को फ्रेडरिक पिंकोट यू.के. हिंदी प्रचार सम्मान। साथ ही डॉ. लक्ष्मी मल्ल सिंघवी साहित्य अनुदान योजना के अंतर्गत हिंदी पुस्तकों के प्रकाशन हेतु श्रीमती शैल अग्रवाल को 'बसेरा' कहानी संग्रह, श्री तेजेंद्र शर्मा को 'सपने मरते नहीं' कहानी संग्रह, श्रीमती ज़क़िया ज़ुबेरी को 'सांकल' कहानी संग्रह तथा श्रीमती वंदना मुकेश को 'मौन मुखर जब' काव्य संग्रह के लिए 250 पौंड की राशि अनुदान स्वरूप प्रदान की गई।

साभार : भारतीय उच्चायोग, लंदन वेबसाइट

स्पेन

13 जनवरी की शाम को 'कासा दे ला इंडिया (भारत भवन)' में विश्व हिंदी दिवस 2015 मनाया गया। हिंदी संघ के पूर्व छात्र, हिंदी संबंधित गतिविधियों से जुड़े प्राध्यापक और भाषाविदों तथा कुछ नए और उत्साही छात्रों ने कार्यक्रम में भाग लिया। भारतीय राजदूतावास के द्वितीय सचिव, श्री मैत्रेय कुलकर्णी, 'कासा दे ला इंडिया' के निदेशक, श्री गियेर्मो रोड्रिगेज़ और वय्यादोलिद विश्वविद्यालय के उप-कुलपति, श्री खोसे रामोन गोंजालेज़ ने अपने विचार

विश्व हिंदी दिवस 2015 विश्व भर में

व्यक्त किए। पूर्व छात्रों ने हिंदी संबंधित गतिविधियों के अपने अनुभव सुनाए। सभी उपस्थित पूर्व और नए छात्रों, प्राध्यापकों और भाषाविदों ने वय्यादोलिद विश्वविद्यालय में भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद की 'हिंदी चेयर' की स्थापना की संभावना पर संतुष्टि जताई।

साभार : भारतीय दूतावास, माड्रिड

मिन्स्क, बेलारूस

भारतीय दूतावास, मिन्स्क के प्रांगण में 10 जनवरी, 2015 को विश्व हिंदी दिवस मनाया गया। इस अवसर पर बेलारूस में भारतीय राजदूत, श्री मनोज के. भारती ने प्रधान मंत्री का संदेश पढ़ा और श्रोताओं के समक्ष हिंदी भाषा के विभिन्न पक्षों पर प्रकाश डाला। हिंदी कक्षा के छात्रों ने अवसर का लाभ उठाते हुए कविता तथा कहानी पठन, गायन से अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन भी किया।

साभार : भारतीय दूतावास, मिन्स्क वेबसाइट

मास्को, रूस

विश्व हिंदी दिवस के उपलक्ष्य में मास्को के भारतीय सांस्कृतिक केंद्र के

सभागार में भव्य आयोजन हुआ। इस अवसर पर रूसी भारतविद् व हिंदी छात्र उपस्थित थे। इंडियन मिशन के उप-प्रधान, श्री संदीप आर्या ने अपने वक्तव्य में कहा कि हम इस बात से खुश हैं कि विश्व हिंदी दिवस के समारोहों में रूसी जन भारी संख्या में भाग ले रहे हैं। इस अवसर पर सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन भी हुआ जिसमें छात्रों ने भारतीय वेशभूषा पहनकर एक भारतीय महाकाव्य के अंकों पर अभिनय किया।

साभार : रेडियो रूस

सुवा, फ़िजी

बैंक ऑफ़ बड़ौदा, सुवा ने 10 जनवरी, 2015 को विश्व हिंदी दिवस के उपलक्ष्य में अपने किंग्स स्ट्रीट, नसोरी कार्यालय में एक समारोह का आयोजन किया जिसमें भारतीय उच्चायुक्त, सुवा, फ़िजी विशेष रूप से उपस्थित थे। बैंक के

सभी कर्मचारियों ने भी उत्साहपूर्वक भाग लिया।

साभार : भारतीय उच्चायोग, सुवा

टोरंटो

10 जनवरी, 2015 को भारतीय दूतावास, टोरंटो के परिसर में विश्व हिंदी दिवस के उपलक्ष्य में एक कवि गोष्ठी का आयोजन किया गया। श्री अखिलेश मिश्र, कोंसल जनरल ने अपने संदेश में यह स्पष्ट किया कि कैसे हिंदी भाषा द्वारा विदेश में भारतीय संस्कृति को जीवित रखा जा सकता है। आयोजन में लोगों की अच्छी प्रतिभागिता रही। लगभग 30 कवियों ने अपनी कविता के साथ समा बाँध ली।

साभार : भारतीय महावाणिज्यदूतावास, टोरंटो वेबसाइट

हंबन्टोटा, श्री लंका

31 जनवरी, 2015 को भारतीय महावाणिज्य दूतावास, हंबन्टोटा द्वारा दूतावास के प्रांगण में विश्व हिंदी दिवस का आयोजन किया गया। इस अवसर पर विभिन्न विषयों पर हिंदी में वक्तव्य व प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता का आयोजन हुआ। दूतावास के अधिकारी, हिंदी छात्र व श्री लंका के निवासियों ने इस प्रतियोगिता और दूसरे सांस्कृतिक कार्यक्रमों में भाग लिया। हरेक श्रेणी के प्रथम तीन विजेताओं को पुरस्कृत किया गया तथा अन्य सभी प्रतिभागियों को उनकी प्रतिभागिता के लिए समाश्वासक पुरस्कार दिया गया।

साभार : भारतीय महावाणिज्यदूतावास, हंबनटोटा वेबसाइट

कैंडी, श्री लंका

भारत के सहायक उच्चायोग, कैंडी के भारतीय कला केंद्र के सभागार में 30 जनवरी, 2015 को विश्व हिंदी दिवस का भव्य आयोजन किया गया। विश्व हिंदी दिवस के उपलक्ष्य में आयोजित निबंध, वाद-विवाद व भाषण प्रतियोगिता के विजेताओं को पुरस्कृत किया गया तथा एक सांस्कृतिक कार्यक्रम की प्रस्तुति भी हुई।

साभार : भारतीय कला केंद्र, कैंडी

कोलंबो, श्री लंका

12 जनवरी, 2015 को भारतीय सांस्कृतिक केंद्र, कोलंबो ने भव्य रूप से विश्व हिंदी दिवस मनाया। विश्व हिंदी दिवस के उपलक्ष्य में आयोजित प्रतियोगिताओं के विजेताओं को पुरस्कार तथा 2014 के परीक्षाओं में उत्तीर्ण छात्रों को प्रमाण पत्र प्रदान किए गए।

साभार : भारतीय सांस्कृतिक केंद्र, कोलंबो वेबसाइट

नेपाल

12 जनवरी को भारतीय दूतावास, काठमाण्डू द्वारा अन्नपूर्णा होटल में विश्व हिंदी दिवस के अवसर पर एक वृहद कार्यक्रम का आयोजन किया गया। नेपाल के उपराष्ट्रपति महामहिम परमानन्द झा कार्यक्रम में मुख्य अतिथि थे तथा कार्यक्रम की अध्यक्षता भारतीय राजदूत महामहिम रंजीत राय ने किया। त्रिभुवन विश्वविद्यालय केंद्रिय हिंदी विभाग की विभागाध्यक्ष डॉक्टर श्वेता दीप्ति व भारतीय गृह मंत्रालय के अंतर्गत राज भाषा विभाग के तकनीकि निर्देशक हरिन्दर कुमार भी विशेष रूप से उपस्थित थे। अवसर पर कवि गोष्ठी का आयोजन भी हुआ।

साभार : हिमालिनी पत्रिका

विश्व हिंदी सचिवालय का 7वाँ आधिकारिक कार्यारंभ दिवस

बाएँ से: श्री सांताराम बाबू, श्रीमती चित्रा मुद्गल, श्री गंगाधरसिंह सुखलाल

सचिवालय द्वारा 11 फ़रवरी, 2008 को आधिकारिक रूप से कार्य आरम्भ किए जाने के सात वर्ष पूरे होने के अवसर पर 11 फ़रवरी, 2015 को विश्व हिंदी सचिवालय ने शिक्षा एवं मानव संसाधन, तृतीयक शिक्षा व वैज्ञानिक अनुसंधान मंत्रालय तथा भारतीय उच्चायोग के सौजन्य से अपना आधिकारिक कार्यारंभ दिवस समारोह मनाया। अवसर पर महात्मा गांधी संस्थान की वसंत पत्रिका के 'भानुमती नागदान व पूजानन्द नेमा विशेषांक' का लोकार्पण भी किया गया। समारोह का आयोजन मोका, मॉरीशस स्थित महात्मा गांधी संस्थान के सुब्रमण्यं भारती सभागार में सफ़लतापूर्वक संपन्न हुआ जिसके मुख्य अतिथि के रूप मे मॉरीशस के कला व संस्कृति मंत्री, माननीय श्री सांताराम बाबू उपस्थित रहे। अवसर पर महात्मा गांधी संस्थान की वसंत पत्रिका के 'भानुमती नागदान व पूजानन्द नेमा विशेषांक' का लोकार्पण भी किया गया।

प्रत्येक आधिकारिक कार्यारंभ दिवस के समान इस वर्ष भी सचिवालय ने भारत के एक प्रसिद्ध हिंदी सृजनधर्मी को समारोह के अतिथि वक्ता के रूप में एक वक्तव्य के लिए आमंत्रित किया था। इस वर्ष सचिवालय को भारत इस अवसर पर मॉरीशस के कला व संस्कृति मंत्री, माननीय श्री सांताराम बाबू मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थितसचिवालय को ने भारत की प्रसिद्ध भारतीय लेखिका, स्तंभकार, पटकथाकार, अनुवादक, नाटककार, चित्रकार, समाज सेवी व महिला लेखन की मूर्धन्य हस्ताक्षर श्रीमती चित्रा मुद्गल का स्वागत करने का अवसर प्राप्त हुआ।को अतिथि वक्ता के रूप में आमंत्रित किया था। श्रीमती मुद्गल ने 'समकालीन हिंदी साहित्य और स्त्री विमर्श' पर अपना बीज वक्तव्य प्रस्तुत किया।

समारोह में भारतीय उच्चायोग का प्रतिनिधित्व करते हुए श्री मयंक सिंह, महात्मा गांधी संस्थान की महानिदेशिका श्रीमती सूर्या गयान व निदेशिका डॉ. श्रीमती कुंजल, विश्व हिंदी सचिवालय के शासी परिषद के सदस्य श्री अजामिल माताबदल, देश की विभिन्न हिंदी सेवी संस्थाओं के अध्यक्ष व प्रतिनिधिगण उपस्थित हुए।

कला व संस्कृति मंत्री, माननीय श्री सांताराम बाबू ने विश्व हिंदी सचिवालय की वर्षगांठ के लिए बधाई देते हुए यह आश्वासन दिया कि हिंदी तथा अन्य पूर्वजीय भाषाओं सहित कला व सृजनशीलता के प्रचार-प्रसार में संस्थाओं को मंत्रालय की ओर से पूर्ण सहयोग प्राप्त होगा। उन्होंने यह भी कहा कि वह दिन दूर नहीं जब हिंदी सहित अन्य भारतीय भाषाओं की महिमा विश्व भर में गूंजेगी।

महात्मा गांधी संस्थान की महानिदेशिका श्रीमती गयान ने सचिवालय को शुभकामनाएँ देते हुए अपने वक्तव्य में हिंदी तथा अन्य भारतीय भाषाओं में सृजनात्मकता की कमी को उभारा तथा युवा पीढ़ी को संबोधित करते हुए कहा कि सृजन से ही हिंदी को अंतरराष्ट्रीय स्तर पर पहुँचाया जा सकता है।

कार्यक्रम का आरंभ पुष्प गुच्छों तथा सचिवालय के कार्यवाहक महासचिव, श्री गंगाधरसिंह सुखलाल के स्वागत वक्तव्य से हुआ। अपने स्वागत वक्तव्य में श्री सुखलाल ने उपस्थित महानुभवों, गणमान्य अतिथियों, प्राध्यापकगण, शिक्षा मंत्रालय के प्रतिनिधिगण, छात्रगण, हिंदी प्रेमियों तथा स्व. श्रीमती भानुमती नागदान व स्व. श्री पूजानंद नेमा के परिवार का अभिवादन व धन्यवाद करते हुए छात्रों को अध्ययन साधना के साथ-साथ सृजन की ओर भी बढ़ने के लिए प्रोत्साहित किया। उन्होंने याद दिलाया कि इसी उद्देश्य को ध्यान में रखते हुए श्रीमती चित्रा मुद्गल जैसी बहुमुखी प्रतिभा की धनी साहित्यकार को आमंत्रित किया गया।

'वसंत' का लोकार्पण
बाएँ से: श्री अजामिल माताबदल, डॉ. वी. डी. कुंजल, श्री मयंक सिंह, माननीय श्री सांताराम बाबू, श्रीमती सूर्यकान्ति गायान, श्रीमती चित्रा मुद्गल, डॉ. श्रीमती माधुरी रामधारी, श्री गंगाधरसिंह सुखलाल

अवसर पर महात्मा गांधी संस्थान के सृजनात्मक लेखन व प्रकाशन विभाग द्वारा प्रकाशित त्रैमासिक पत्रिका 'वसंत' का भानुमती नागदान व पूजानन्द नेमा विशेषांक का लोकार्पण किया गया।

श्रीमती चित्रा मुद्गल को धन्यवाद स्वरूप विश्व हिंदी सचिवालय द्वारा एक स्मृति चिह्न भेंट की गई। समारोह में श्रीमती चित्रा मुद्गल के जीवन व कृतित्व का परिचय उन छात्रों द्वारा ही दिया गया जो एम.ए. पाठ्यक्रम के अंतर्गत लेखिका की कृतियों का अध्ययन करते हैं। एम.ए. द्वितीय वर्ष की छात्रा श्रीमती मेधाविनी रसिक द्वारा सुन्दर प्रस्तुति हुई। प्रस्तुति के बाद श्रीमती चित्रा मुद्गल ने 'समकालीन हिंदी साहित्य और स्त्री विमर्श' पर अपना वक्तव्य प्रस्तुत करते हुए कहा कि स्त्री विमर्श समाज विमर्श का ही एक अंग है। समकालीन हिंदी साहित्य में स्त्री विमर्श के इतिहास पर प्रकाश डालते हुए उन्होंने कहा कि जिस पितृसत्ता ने स्त्री को बंधन दिया उसे तोड़ने की पहल भी उसी ने की। विभिन्न साहित्यकारों का उल्लेख करते हुए उन्होंने यह अंतर स्पष्ट किया कि स्त्री विमर्श का सही अर्थ पुरुष को बाहर निकालना नहीं है। स्त्री की स्वायत्तता व आत्मनिर्भरता ही सही अर्थों में विमर्श है। श्रीमती मुद्गल का वक्तव्य इतिहास से लेकर समकालीनता तक तथा हिंदी, अन्य भारतीय भाषाओं व विश्व साहित्य के उदाहरणों से सजा हुआ उनके अपने साहित्य कर्म व समाज सेवा के असंख्य अनुभवों से सराबोर उपस्थित सभी श्रोताओं को घण्टों तक बाँधे रहा। डॉ. श्रीमती संयुक्ता भुवन-रामसारा, अध्यक्षा, हिंदी विभाग ने मंच संचालन किया। डॉ. श्रीमती माधुरी रामधारी, अध्यक्षा, सृजनात्मक लेखन व प्रकाशन विभाग द्वारा धन्यवाद ज्ञापन के साथ ही कार्यक्रम संपन्न हुआ।

श्रीमती चित्रा मुद्गल व श्री अभिमन्यु अनत

सभागार को संबोधित करती हुई श्रीमती चित्रा मुद्गल

सृजन : महिला लेखन, स्त्री विमर्श व सृजनात्मकता पर काय

आधिकारिक कार्यारंभ की वर्षगांठ के औपचारिक कार्यक्रम के पश्चात श्रीमती चित्रा मुद्गल के संचालन में महिला लेखन, स्त्री विमर्श व सृजनात्मकता पर कार्य सत्र हुए। इस सत्र को उन्होंने एक खुले मंच की तरह रखा तथा उपस्थित हिंदी प्रेमियों से अपने-अपने सवाल तथा जिज्ञासाओं को अभिव्यक्त करने का अवसर दिया। इन सत्रों में ही प्रो. कृष्णदत्त पालीवाल के देहांत की दुखद खबर सभा को दी गई। उनकी स्मृति में मौन धारण किया गया तथा उनके सान्निध्य में शिक्षार्जन कर चुके मॉरीशसीय छात्रों ने उनके संस्मरण सुनाए।

श्रीमती चित्रा मुद्गल के सम्मान में आयोजित 'अभिनन्दन समारोह तथा लेखिका से भेंट'

बाएँ से: श्री गंगाधरसिंह सुखलाल, श्री बालचन्द तानाकूर, डॉ. उदय नारायण गंगू, श्रीमती मिला धनुकचंद व सभागार को संबोधित करती हुई श्रीमती चित्रा मुद्गल

आधिकारिक कार्यारंभ के मुख्य समारोह से पूर्व 9 फ़रवरी, 2015 को ऋषि दयानंद संस्थान के सभागार में श्रीमती चित्रा मुद्गल के सम्मान में एक 'अभिनन्दन समारोह तथा लेखिका से भेंट' का आयोजन किया गया था। इस आयोजन से शिक्षकों तथा छात्रों को श्रीमती चित्रा मुद्गल से भेंट करने का अवसर प्राप्त हुआ। संस्थान के डीन डॉ. उदय नारायण गंगू, श्री बालचंद तानाकूर, श्रीमती मिला धनुकचंद, संस्थान के प्राध्यापकगण, छात्र व संस्थान के अधिकारी व सदस्यों की उपस्थिति में श्रीमती मुद्गल द्वारा व्याख्यान उनके लिए अत्यन्त लाभदायक रहा।

विश्व हिंदी सचिवालय की रिपोर्ट

वर्धा के महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय में तीन दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी

28-30 मार्च, 2015 को शिक्षा एवं मनोविज्ञान विभाग तथा भारतीय सामाजिक विज्ञान अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली के संयुक्त तत्वावधान में महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा द्वारा **राष्ट्रीय संगोष्ठी** का आयोजन किया गया। उद्घाटन समारोह में वर्धा के कुलपति प्रो. गिरीश्वर मिश्र ने अपना अध्यक्षीय वक्तव्य सुनाया। इस अवसर पर एन.सी.ई.आर.टी., नई दिल्ली के निदेशक बी.के. त्रिपाठी, दिल्ली विश्वविद्यालय में महिला अध्ययन व विकास विभाग की निदेशिका प्रो. भारती बावेजा, दिल्ली विश्वविद्यालय में अंतरराष्ट्रीय संबंध विभाग के अधिष्ठाता प्रो. आनंद प्रकाश, दिल्ली विश्वविद्यालय में राजनीति विभाग के प्रो. प्रकाश नारायण, विश्वविद्यालय के शिक्षा विद्यापीठ के अधिष्ठाता प्रो. अरबिंद कुमार झा, आई.आई.टी. कानपुर की प्रो. लीलावती कृष्णन, जे.एन.यू., नई दिल्ली के प्रो. अरविंद कुमार मिश्र, प्रो. बालकृष्ण उपाध्याय एवं नाट्यकला एवं फिल्म अध्ययन विभाग के अध्यक्ष प्रो. सुरेश शर्मा मंचासीन थे। अतिथियों द्वारा दीप प्रज्वलन के साथ समारोह का उद्घाटन हुआ। समारोह में विभिन्न विद्यापीठों के अधिष्ठाता, अध्यापक, अधिकारी, शोधार्थी, प्रतिभागी तथा विद्यार्थी तथा महाराष्ट्र, हरियाणा, छत्तीसगढ़, बिहार, आंध्र प्रदेश तथा तेलंगाना आदि राज्यों से प्रतिनिधियों ने बड़ी संख्या में अपनी उपस्थिति देकर कार्य की शोभा बढ़ाई। समारोह के समापन में कुलपति प्रो. गिरीश्वर मिश्र ने प्रतिभागियों को प्रमाण पत्र प्रदान किए। समारोह का संचालन शिक्षा विभाग के सहायक प्रो. ऋषभ मिश्र ने किया।

बी.एस. मिरगे की रिपोर्ट

कर्नाटक में नई सदी की हिंदी कविता पर द्वि-दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी

दीप प्रज्वलन करते हुए महानुभाव

25 फरवरी, 2015 को बी.एल.डी.इ. संस्था के एस.बी. कला एवं के.सी.पी विज्ञान महाविद्यालय, विजयपुर, कर्नाटक तथा रानी चन्नम्मा विश्वविद्यालय हिंदी प्राध्यापक संघ के तत्वावधान में विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (यू.जी.सी.) के सहयोग से **नई सदी की हिंदी कविता: दशा और दिशा** विषयक द्वि-दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया। यरनाल विरक्त मठ के संगनबसव महास्वामी द्वारा दीप प्रज्वलन के साथ संगोष्ठी का उद्घाटन हुआ। उनके उद्घाटन भाषण के बाद प्रो. ऋषभदेव शर्मा ने बीज वक्तव्य प्रस्तुत किया। प्राचार्य डॉ. के.जी. पुजारी ने कार्यक्रम की अध्यक्षता की। संगोष्ठी के संयोजक डॉ. एस.टी. मेरवाडे ने अतिथियों का स्वागत किया तथा प्रो. एस.जे. जहाँगीरदार ने सूत्र संचालन किया। संगोष्ठी को चार सत्रों में बाँटा गया जिसमें डॉ. पूर्णिमा शर्मा, डॉ. गुर्रमकोंडा नीरजा, प्रो. अमित चिंगले, प्रो. ऋशभदेव शर्मा, डॉ. काशीनाथ अंबलगे, प्रो. एस.के. पवार डॉ. काशीनाथ अंबलगे तथा डॉ. दत्तात्रेय व विभिन्न महाविद्यालयों से आए अध्यापकों तथा शोध छात्रों ने भाग लिया। समारोह समारंभ की मुख्य अतिथि कथाकार मधु कांकरिया रहीं। अध्यक्षता प्रो. एस.एच. लगली ने की। संगोष्ठी में 300 से अधिक प्रतिभागियों ने भाग लिया।

डॉ. गुर्रमकोंडा नीरजा की रिपोर्ट

हैदराबाद में त्रिदिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी व मुक्तिबोध की कविता 'अंधेरे में': अर्धशती समारोह

दीप प्रज्वलन करते हुए महानुभाव

28 से 30 मार्च, 2015 को उच्च शिक्षा और शोध संस्थान, दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा, मद्रास की स्वर्ण जयंती के उपलक्ष्य में केंद्रीय हिंदी निदेशालय, नई दिल्ली और स्टेट बैंक ऑफ़ हैदराबाद के सहयोग से एक राष्ट्रीय संगोष्ठी व ''मुक्तिबोध की कविता 'अंधेरे में': अर्धशती समारोह'' आयोजित किया गया। उद्घाटन प्रख्यात साहित्यकार, वर्तमान सांसद और उत्तराखंड के पूर्व मुख्य मंत्री डॉ. रमेश पोखरियाल 'निशंक' द्वारा किया गया। उद्घाटन समारोह की अध्यक्षता डॉ. योगेंद्रनाथ शर्मा 'अरुण' ने की। सम्मान्य अतिथि के रूप में पद्मश्री जगदीश मित्तल व विशेष अतिथि डॉ. विष्णु भगवान शर्मा, सहायक महाप्रबंधक राजभाषा, स्टेट बैंक ऑफ़ हैदराबाद, दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा के सह-सचिव के. वैंकटेश्वर राव, संगोष्ठी निदेशक प्रो. ऋषभ देव शर्मा मंचासीन थे। सभी ने 'अंधेरे में' कविता पर केंद्रित संगोष्ठी के महत्व पर प्रकाश डालते हुए हिंदी के राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय संदर्भ पर चर्चा की। अवसर पर 'अंधेरे में' का मंचन किया गया। दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा की मासिक पत्रिका 'स्रवंति'-संगोष्ठी विशेषांक तथा 'अंधेरे में' का 12 अलग-अलग भाषाओं में हुए अनुवाद का लोकार्पण भी किया गया। दूसरा दिन अत्यंत विचारोत्तेजक और मौलिक सूझ से परिपूर्ण रहा। तीसरे दिन दो समानांतर सत्रों में 60 से अधिक शोधार्थियों ने शोध पत्र प्रस्तुत किए। प्रो. ऋषभ देव शर्मा को उनकी सुदीर्घ हिंदी सेवा और साहित्य सृजन हेतु हैदराबाद स्थित प्रतिभा प्रकाशन की ओर से 'सुगुणा साहित्य पुरस्कार 2015' प्रदान किया गया। संगोष्ठी में हैदराबाद, तेलंगाना व आंध्र प्रदेश के इलाकों से आए 200 से अधिक साहित्य प्रेमी, पत्रकार, विभिन्न विश्वविद्यालय के प्राध्यापक, शोधार्थी एवं छात्र उपस्थित रहे।

डॉ. गुर्रमकोंडा नीरजा की रिपोर्ट

भोपाल में दो दिवसीय भारतीय भाषा सम्मेलन

14-15 फरवरी, 2015 को भोपाल में माखनलाल चतुर्वेदी राष्ट्रीय पत्रकारिता एवं संचार विश्वविद्यालय, अटल बिहारी वाजपेयी हिंदी विश्वविद्यालय, शिक्षा संस्कृति उत्थान न्यास, नई दिल्ली तथा लक्ष्मीनारायण कॉलेज आफ़ टेक्नोलॉजी के संयुक्त तत्वावधान में एल.एन.सी.टी. कॉलेज के सभागार में **दो दिवसीय भारतीय भाषा सम्मेलन** का आयोजन किया गया। मुख्य अतिथि के रूप में भोपाल के उच्च शिक्षा मंत्री माननीय श्री उमाशंकर गुप्ता तथा मुख्य वक्ता के रूप में माइक्रोसॉफ्ट, यू.एस.ए. के कंप्यूटर इंजीनियर एवं भाषा विज्ञानी श्री संक्रांत सानू उपस्थित थे। सम्मेलन में भाषा एवं शिक्षा, विधि एवं न्याय क्षेत्र में भारतीय भाषा, वित्तीय क्षेत्र में भारतीय भाषा, जनसंचार एवं सूचना प्रौद्योगिकी में भारतीय भाषा जैसे विषयों पर सामूहिक एवं समानांतर सत्र हुए जिसमें प्रो. मोहनलाल छीपा, श्री जवाहर कर्नावट, सुश्री विजय लक्ष्मी, श्री बसंत चापा, श्री प्रवीण जैन एवं श्री के. मणि कुमार ने सुंदर प्रस्तुति दी। अवसर पर श्री संक्रांत सानू की पुस्तक 'अंग्रेज़ी भाषा का भ्रमजाल', पत्रकारिता विश्वविद्यालय की त्रैमासिक गृह पत्रिका 'एमसीयू समाचार' तथा श्री विश्वलेश्वर दयालु एवं श्री आलोक मिश्रा द्वारा संपादित पुस्तक 'संस्कृत, संस्कृति और विदेशी भाषा विवाद : एक तथ्यात्मक विमर्श' का लोकार्पण किया गया। 15 फरवरी को समापन समारोह का आयोजन किया गया जिसमें मुख्य अतिथि के रूप में महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा के कुलाधिपति प्रो. कपिल कपूर उपस्थित थे। अवसर पर आचार्य चम्मू कृष्ण शास्त्री, श्री प्रेमनाथ पाण्डेय, प्रो. बृज किशोर कुठियाला, शिक्षा संस्कृति उत्थान न्यास के श्री अतुल कोठारी ने अपने वक्तव्य सुनाए। सम्मेलन के समापन सत्र में सभी प्रस्तुतियों का प्रतिवेदन प्रस्तुत किया गया।

साभार: हिंदी मीडिया.इन तथा युग मानस ब्लॉग

नई दिल्ली में 23वाँ विश्व पुस्तक मेला

14 से 22 फरवरी, 2015 तक नई दिल्ली के प्रगति मैदान में नेशनल बुक ट्रस्ट और इंडिया ट्रेड प्रमोशन ऑर्गनाइज़ेशन द्वारा 23वाँ विश्व पुस्तक मेला का आयोजन किया गया जिसका विषय 'सूर्योदय-पूर्वोत्तर भारत के उभरते स्वर' रखा गया था। इस मेले का उद्घाटन मानव संसाधन विकास मंत्री माननीया श्रीमती स्मृति ज़ुबिन ईरानी द्वारा विशिष्ट अतिथि नरेंद्र कोहली की उपस्थिति में किया गया। मेले में सिंगापुर को अतिथि देश बनाया गया। देश-विदेश से सैकड़ों प्रकाशन संस्थान, लेखक व पाठक जुटे हुए थे। एक ही स्थान पर देशी-विदेशी भाषाओं की अनगिनत पुस्तकों का समागम देखा गया। एक हज़ार से अधिक प्रकाशकों ने मेले में भाग लिया। मेले को हॉल तथा स्टॉल में विभाजित किया गया था जिसमें लेखक मंच स्थापित किए गए जहाँ साहित्य के विभिन्न विषयों पर विमर्श किए गए। अलग-अलग हॉल व स्टॉल में कई प्रसिद्ध हिंदी लेखकों की पुस्तकों का लोकार्पण भी किया गया। हिंदी के क्षेत्र में 50 से भी अधिक प्रकाशकों के स्टैंड व 275 स्टॉल लगे हुए थे।

साभार: www.newdelhiworldbookfair.gov.in

राजमंड्री, आंध्र प्रदेश में रवींद्रनाथ ठाकुर पर राष्ट्रीय संगोष्ठी

पद्मश्री यार्लगड्डा लक्ष्मी प्रसाद, डॉ. एस.वी.एस.एस. नारायणराजू, डॉ. लामेश्वरराव, डॉ. आर.एस. सर्राजू, डॉ. पेरिसेट्टि श्रीनिवासराव, डॉ. एंड्लूरि सुधाकर, डॉ. ऋषभदेव शर्मा

5-6 मार्च 2015 को 'अक्षरा' साहिती सांस्कृतिक सेवा पीठम् के तत्वावधान में तथा हिंदी विभाग, आचार्य नागार्जुन विश्वविद्यालय, गुंटूर के सहयोग से गेल (इंडिया) लिमिटेड, राजमंड्री के सौजन्य से **कवींद्र रवींद्र का भारतीय भाषाओं पर प्रभाव** विषयक द्वि-दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजान किया गया। मुख्य अतिथि गेल (इंडिया) लिमिटेड, राजमंड्री के महाप्रबंधक श्री एम. वी. अय्यर तथा विशिष्ट अतिथि के रूप में एस.के.वी.टी. डिग्री कलाशाला के प्राचार्य श्री पी. राममूर्ती, के. (फणि) नागेश्वरराव उपस्थित थे। अध्यक्षता डॉ. कर्रि रामारेड्डी ने की। अवसर पर प्रो. यार्लगड्डा ने डॉ. पेरिसेट्टि श्रीनिवासराव के संपादन में प्रकाशित स्मारिका का लोकार्पण करने के अतिरिक्त सभी प्रतिनिधियों तथा शोधार्थियों को प्रमाण पत्र भी प्रदान किए। बीज वक्तव्य आचार्य आर.एस. सर्राजु ने दिया। सम्मेलन में प्रो. ऋषभ देव शर्मा, प्रो. नारायणराजु, आचार्य एंड्लूरी सुधाकर, आचार्य रामप्रकाश, डॉ. सी. अन्नपूर्णा, डॉ. रामकुमार, श्री पी. रामाराव, डॉ. कामेश्वरराव, डॉ. अनीता गंगूली, डॉ. रविचंद्रराव, डॉ. सोनु जेसवानी, श्री एम.एस.वी. गंगराजु, श्री वेत्सा पांडुरंगाराव, डॉ. पी.वी.बी. संजीवराव, श्रीमती पी. जयलक्ष्मी, एस.के.वै.एन. हिन्दी शिक्षण प्रशिक्षण महाविद्यालय के छात्राध्यापक गण, प्राचार्य श्री मूर्ति, अक्षरा के सदस्य, हिंदी प्रेमी, हिंदी पंडित, विभिन्न संस्थानों से जुड़े विद्वानों आदि ने भाग लिया। राष्ट्रीय संगोष्ठी निदेशक डॉ. पेरिसेट्टि श्रीनिवासराव ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

डॉ. पेरिसेट्टि श्रीनिवासराव की रिपोर्ट

केनरा बैंक में इंटरनेट बैंकिंग सुविधा हिंदी में भी उपलब्ध

श्रीमती पूनम जुनेजा द्वारा केनरा बैंक के 'हिंदी इंटरनेट बैंकिंग पॉर्टल' का लोकार्पण

9-10 मार्च, 2015 को क्षेत्रीय कर्मचारी प्रशिक्षण महाविद्यालय, गुड़गाँव में केनरा बैंक राजभाषा अधिकारियों का 32वाँ अखिल भारतीय वार्षिक सम्मेलन आयोजित किया गया। श्रीमती पूनम जुनेजा, संयुक्त सचीव, राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित थीं। अवसर पर श्रीमती जुनेजा द्वारा केनरा बैंक के ***इंटरनेट बैंकिंग पॉर्टल के हिंदी संस्करण*** का लोकार्पण किया गया। उन्होंने इस मौके पर कहा कि इंटरनेट बैंकिंग की सुविधा हिंदी में उपलब्ध होने से ग्राहकों को इसका अभूतपूर्व फ़ायदा होगा। यह केनरा बैंक के सूचना प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में राजभाषा कार्यान्वयन संबंधी एक और महत्वपूर्ण उपलब्धि है। उन्होंने अपने उद्बोधन में केनरा बैंक द्वारा राजभाषा कार्यान्वयन व बैंकिंग के अन्य क्षेत्रों में किए जा रहे उत्तम निष्पादन की प्रशंसा की और विशेष रूप से सराहना करते हुए कहा कि दक्षिण स्थित बैंक होने के बावजूद भी केनरा बैंक ने विभिन्न टेक्नॉलोजी उत्पादों को हिंदी व क्षेत्रीय भाषाओं में उपलब्ध कराया है। यह बैंक इंटरनेट बैंकिंग में हिंदी विकल्प प्रदान करने वाला सार्वजनिक क्षेत्र का संभवत: पहला बैंक है। इस बैंक ने विगत एक वर्ष में अपने ग्राहकों के सुविधार्थ ए.टी.एम. में हिंदी तथा क्षेत्रीय भाषाओं में लेन-देन पर्चियों के मुद्रण, मोबाइल एप्स ***इ-इन्फ़ोबुक*** में हिंदी तथा आठ अन्य भारतीय भाषाओं का विकल्प, मोबाइल के माध्यम से अंतिम पाँच लेन-देन संबंधी जानकारी हिंदी में पाने के लिए मिस्ड कॉल संख्या आदि की सुविधाएँ उपलब्ध कराई हैं। सम्मेलन में बैंक के मानव संसाधन विभाग के महाप्रबंधक, श्री सी.पी. गिरि, राजभाषा की पर्यवेक्षी कार्यपालक उप महाप्रबंधक श्रीमती सुलेखा मोहन उपस्थित थीं।

साभार: वैश्विक हिंदी सम्मेलन

फेसबुक, टविटर, वाटसएप को टक्कर देगी हिंदी साइट 'शब्द नगरी'!

24 जनवरी, 2015 को आईआईटी के आउटरिच ऑडिटोरियम में आईआईटियंस की सोशल नेटवर्किंग साइट और ब्लॉगिंग वेबसाइट **'शब्दनगरी'** का औपचारिक लोकार्पण हुआ। आईआईटी मुंबई के पूर्व छात्रों ने हिंदी में पहली बार एक ऐसी वेबसाइट शुरू की है जहाँ यूज़र फेसबुक की तरह अपना पेज बना सकता है और ब्लॉग के ज़रिए विचार साझा कर सकता है। **'शब्दनगरी'** के नाम से शुरू की गई यह वेबसाइट फेसबुक से प्रेरित होने के बावजूद उसकी हूबहू नकल नहीं है। इस वेबसाइट पर यूज़र हिंदी में अपनी कहानियाँ, कविताएँ और कमेंट पोस्ट कर सकते हैं। 'शब्दनगरी' पूरी तरह से हिंदी में बनी है। 'मेक इन इंडिया' से प्रेरित इस वेबसाइट का प्रयोग हिंदी भाषी आसानी से कर सकते हैं। हिंदी के ऑनस्क्रीन की-बोर्ड बनाए गए हैं और इसका प्रयोग किसी भी सोशल वेबसाइट की तरह किया जा सकता है। इससे हिंदी भाषी क्षेत्रों के 65 करोड़ लोगों को जोड़ने की योजना है। इस वेबसाइट पर सभी सेवाएँ नि:शुल्क हैं।

साभार: ज़ी न्यूज़

नई दिल्ली में रामायण पर केंद्रित पुस्तकों का लोकार्पण

बाएँ से: श्री प्रभात, मान. डॉ. महेश शर्मा, मान. कर्नल राज्यवर्धन सिंह राठौड़, पं. राजेंद्र अरुण, महामहिम श्री जयकर नायक, डॉ. विनोद बाला अरुण

21 जनवरी, 2015 को नई दिल्ली के कॉन्स्टीट्यूशनल क्लब में प्रसिद्ध रामकथा मर्मज्ञ एवं रामायण सेंटर, मॉरीशस के अध्यक्ष पं. राजेंद्र अरुण तथा प्रख्यात लेखिका एवं विश्व हिंदी सचिवालय की पूर्व महासचिव डॉ. विनोद बाला अरुण की रामकथा पर केंद्रित एवं प्रभात प्रकाशन द्वारा प्रकाशित चार पुस्तकों ***मानस में नारी, स्तुति सुमन, संस्कार रामायण, रामकथा में नैतिक मूल्य*** का लोकार्पण केंद्रीय संस्कृति, पर्यटन तथा उड्डयन राज्य मंत्री माननीय डॉ. महेश शर्मा के कर-कमलों द्वारा संपन्न हुआ। केंद्रीय सूचना एवं प्रसारण राज्य मंत्री माननीय कर्नल राज्यवर्धन सिंह राठौड़ ने कार्यक्रम की अध्यक्षता की। भारत में मॉरीशस के कार्यवाहक उच्चायुक्त महामहिम श्री जयकर नायक विशिष्ट अतिथि के रूप में उपस्थित थे।

सबसे पहले माननीय अतिथियों द्वारा माँ सरस्वती की प्रतिमा का माल्यार्पण किया गया। इसके बाद अतिथियों को पुष्पगुच्छ भेंट कर सम्मानित किया गया। कार्यक्रम की शुरुआत करते हुए डॉ. विनोद बाला अरुण ने पुस्तकों का विस्तृत परिचय देते हुए बताया कि हमारे घरों में अक्सर जन्म-मरण, शादी-विवाह, पर्व-त्योहार के अवसर आते ही रहते हैं। ऐसे अवसरों के लिए 'संस्कार रामायण' बड़ी उपयोगी पुस्तक है। कोई संकट-आपदा आ गई या गृह प्रवेश का ही अवसर है तो हमें पता नहीं होता कि किन चौपाइयों का पाठ करना चाहिए। संस्कार रामायण में ऐसे अलग-अलग अवसरों के उपयुक्त और फलदायी चौपाई-दोहों का चुनाव किया गया है। **स्तुति सुमन** पुस्तक में देव-देवियों की स्तुति में बोले जानेवाले 160 प्रचलित लोकप्रिय मंत्रों और प्रार्थनाओं की विस्तृत व्याख्या की गई है। **रामकथा में नैतिक मूल्य** पुस्तक में रामायण तथा रामचरितमानस में सन्निहित नैतिक मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन करके मानव जीवन में उनकी उपयोगिता का आकलन किया गया है। पं. राजेंद्र अरुण की रामकथा पर केंद्रित पूर्व प्रकाशित सात पुस्तकों के क्रम में **मानस में नारी** में नारी के जीवन, व्यक्तित्व, कृतित्व एवं भावनाओं को विश्लेषित किया गया है।

महामहिम श्री जयकर नायक ने कहा कि ***पं. राजेंद्र अरुण ने मॉरीशस में रामायण सेंटर की स्थापना कर भारत और मॉरीशस के बीच एक सेतु का काम किया है।***

संस्कृति मंत्री माननीय डॉ. महेश शर्मा ने अपने संक्षिप्त उद्‌बोधन में कहा कि ***ऐसी पुस्तकें हमारी संस्कृति और जीवन-मूल्यों को पुष्ट करती हैं। मैं विद्वान लेखक-लेखिका को बधाई देता हूँ कि वे रामायण के आदर्शों-मूल्यों के संवर्धन के लिए काम कर रहे हैं।***

कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे सूचना प्रसारण मंत्री कर्नल राजवर्धन सिंह राठौड़ ने कहा कि ***आज के युग में ऐसी पुस्तकें और ऐसे आयोजन हमारी आस्था को बल देते हैं और सकरात्मक भाव जगाते हैं।***

अंत में रामायण कथा-मर्मज्ञ डॉ. राजेंद्र अरुण ने अपने उद्‌बोधन में कहा कि ***दुनिया में ऐसा कोई उदाहरण नहीं मिलता, जैसा रामायण में उपलब्ध है। यह दुनिया का आदर्श ग्रंथ है। आज कई परिस्थितियों में यह ज़्यादा प्रासंगिक है। यदि सब लोग अपने-अपने धर्म का ईमानदारी से आचरण करें तो दुनिया में अमन-चैन के साथ खुशहाली आ सकती है। रामायण को आत्मसात करके जीवन में उच्चादर्श स्थापित किए जा सकते हैं। यह आपसी-सौहार्द तथा मेल-मिलाप का समर्थन करती है। दुष्टता को कोई पसंद नहीं करता है, इसलिए हम सबको रामायण को अपने आचरण में ढालना चाहिए।***

इसी क्रम में पं. राजेंद्र अरुण और डॉ. विनोद बाला अरुण ने भारत की विदेश मंत्री माननीया श्रीमती सुषमा स्वराज से भेंट की और अपनी पुस्तकें भेजीं।

साभार: प्रभात प्रकाशन

नागपुर में 'संवेदनाओं के स्वर' काव्य संग्रह का लोकार्पण

श्री परमात्मानंद पाण्डेय, श्रीमती सपना दुबे, श्री विनोद नायक व श्री मनोज कुमार शुक्ल

विदर्भ हिंदी साहित्य सम्मेलन, नागपुर के सभागार में मनोज कुमार शुक्ल 'मनोज' के काव्य संग्रह ***संवेदनाओं के स्वर*** का लोकार्पण साहित्य के अंतर्गत गीतांजलि में हुआ। लोकार्पण संस्था के साहित्य सचिव एवं पत्रकार श्री परमात्मानंद पाण्डेय द्वारा संपन्न हुआ। अवसर पर श्रीमती सपना दुबे, व्याख्याता प्रियदर्शिनी कॉलेज नागपुर एवं कार्यक्रम के सह-संयोजक श्री विनोद नायक सहित मनोज कुमार शुक्ल 'मनोज' मंचासीन थे।

संस्था द्वारा कृतिकार का सम्मान करने के पश्चात एक काव्य गोष्ठी का आयोजन उनके मुख्य आतिथ्य में किया गया जिसमें नागपुर के प्रसिद्ध कवियों ने काव्य पाठ किया। कार्यक्रम का संचालन श्री परमानंद पाण्डेय द्वारा किया गया। आभार प्रदर्शन के साथ कार्यक्रम समाप्त हुआ।

मनोज कुमार शुक्ला की रिपोर्ट

रायबरेली में श्री रमाकांत के गीत संग्रह 'बाज़ार हँस रहा है' का लोकार्पण

8 फरवरी, 2015 को लेखपाल संघ सभागार, रायबरेली में चर्चित कवि एवं 'यदि' पत्रिका के संपादक श्री रमाकांत के गीत संग्रह ***बाज़ार हंस रहा है*** का लोकार्पण किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ मुख्य अतिथि, वरिष्ठ गीतकार श्री गुलाब सिंह, वरिष्ठ साहित्यकार श्री रामनारायण रमण, अतिविशिष्ट अतिथि आलोचक श्री शिवकुमार शास्त्री एवं विशिष्ट अतिथि श्री अवनीश सिंह चौहान द्वारा दीप प्रज्ज्वलन से हुआ। तदुपरांत वरिष्ठ साहित्यकार दुर्गा शंकर वर्मा दुर्गेश ने सरस्वती वंदना प्रस्तुत करने के बाद श्री रमाकांत के उक्त संग्रह से कुछ गीतों को विश्लेषणात्मक ढंग से श्रोताओं के समक्ष प्रस्तुत किया। गीतकार रमाकांत ने अपनी रचना–प्रक्रिया को विस्तार से बतलाते हुए कहा कि उन्होंने अपने आस-पास जो भी देखा, सुना और समझा है, उसे अपने गीतों में व्यक्त करने का प्रयास किया है। उन्होंने बतलाया कि उनकी ये लयात्मक अभिव्यक्तियाँ जीवन की सुंदरता के साथ उसकी कलुषता को भी सहज भाषा में प्रस्तुत करती हैं। अवसर पर श्री आनंद, श्री प्रमोद प्रखर, श्री राधेरमण त्रिपाठी, श्री निशिहर, श्री राममिलन, श्री राजेंद्र यादव, श्री राकेश कुमार, श्री राम कृपाल आदि मौजूद रहे। कार्यक्रम का संचालन सुपरिचित कवि श्री जय चक्रवर्ती और आभार अभिव्यक्ति लेखपाल संघ के पूर्व अध्यक्ष श्री हीरालाल यादव ने किए ।

डॉ. अवनीश सिंह चौहान की रिपोर्ट

भाईन्दर में श्री गुलाबचन्द यादव के ललित निबंध संग्रह 'क्षमा करें, मैं हिंदी अख़बार नहीं पढ़ता' का लोकार्पण

25 दिसंबर, 2015 को जनवादी लेखक संघ, मुंबई और परिदृश्य प्रकाशन, मुंबई के संयुक्त तत्वावधान में राहुल बी.एड. कॉलेज, भाईन्दर (पूर्व) में श्री गुलाबचन्द यादव की पहली कृति ***क्षमा करें, मैं हिंदी अख़बार नहीं पढता*** (ललित निबंध संग्रह) का लोकार्पण महाराष्ट्र राज्य हिंदी साहित्य अकादमी के कार्याध्यक्ष डॉ. दामोदर खड़से की अध्यक्षता में हुआ। इस समारोह में विशिष्ट अतिथि के रूप में साहित्यकार डॉ. सुधाकर मिश्र, डॉ. शोभनाथ यादव एवं डॉ. शीतला प्रसाद दुबे उपस्थित थे। लोकार्पण के बाद इस कृति पर समीक्षात्मक वक्तव्य के रूप में श्री ह्रदयेश मयंक, डॉ. राजेंद्र श्रीवास्तव, डॉ. सुलभा कोरे, डॉ. अनंत श्रीमाली और श्री रमन मिश्र ने अपने विचार व्यक्त किए। कार्यक्रम के प्रारंभ में साहित्यकार श्री रमेश यादव ने सभी का स्वागत करते हुए अतिथियों का परिचय दिया। कार्यक्रम का सूत्र संचालन जाने-माने कवि एवं मंच संचालक श्री देवमणि पाण्डेय ने किया। श्री रामविचार यादव ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

श्री गुलाबचंद यादव की रिपोर्ट

सम्मान व पुरस्कार

डॉ. अशोक चक्रधर व श्री बालेंदु शर्मा दाधीच सम्मानित

डॉ. अशोक चक्रधर

श्री बालेंदु शर्मा दाधीच

27 दिसंबर, 2014 को राष्ट्रीय संग्रहालय, नई दिल्ली में व्यंग्य कविताओं के लिए प्रसिद्ध कवि डॉ. अशोक चक्रधर व हिंदी समाचार पोर्टल प्रभासाक्षी.कॉम के संपादक और तकनीक विशेषज्ञ, श्री बालेंदु शर्मा दाधीच को ***डॉ. शंकर दयाल सिंह जनभाषा सम्मान*** से सम्मानित किया गया। यह सम्मान भारत के सांख्यिकी और कार्यक्रम कार्यान्वयन राज्य मंत्री माननीय जनरल डॉ. विजय कुमार सिंह के हाथों तथा पूर्व केंद्रीय मंत्री व राज्यसभा सदस्य श्री सत्यनारायण जटिया की उपस्थिति में किया गया। श्री बालेंदु शर्मा को तकनीकी माध्यमों से हिंदी के विकास में महत्वपूर्ण योगदान के लिए यह सम्मान प्राप्त हुआ है। समारोह में साप्ताहिक हिन्दुस्तान की पूर्व संपादिका शीला झुनझुनवाला, जानी-मानी हिंदी-सेवी कमला सिंघवी, चौथी दुनिया के संपादक श्री संतोष भारतीय, शंकर संस्कृति प्रतिष्ठान के प्रमुख रंजन कुमार सिंह, रश्मि सिंह, मीडिया विशेषज्ञ डॉ. वर्तिका नंदा, प्रसिद्ध प्रकाशक प्रभात कुमार आदि विशेष रूप से उपस्थित रहे।

साभार : हिंदी मीडिया.इन

कनाडा की प्रसिद्ध हिंदी लेखिका स्नेह ठाकुर को इंटरनेशनल विमन एक्सेलेंस अवार्ड 2014

8 मार्च, 2015 को अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस के अवसर पर इंडिया इंटरनेशनल सेंटर, नई दिल्ली में कनाडा की सुप्रसिद्ध लेखिका स्नेह ठाकुर को विमन इंटरनेशनल नेटवर्क द्वारा 'इंटरनेशनल विमन एक्सेलेंस अवार्ड 2014' से सम्मानित किया गया। यह सम्मान 'द इंटरनेशनल कोर्ट ऑफ़ गवर्नरज़' द्वारा प्रदान किया गया।

स्नेह ठाकुर द्वारा साहित्य की अनेक विधाओं में कई पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं। आपके उपन्यास 'कैकेयी चेतना-शीखा' को साहित्य अकादमी एम.पी. अखिल भारतीय 'वीर सिंह देव सम्मान' प्राप्त हुआ है। इस पुस्तक को राष्ट्रपति भवन में रखे जाने का सम्मान भी मिला है और इसके दूसरे संस्करण का प्रकाशन भी एक वर्ष में हो गया। जयशंकर प्रसाद सभागर, लखनऊ में आपको 'अवध रत्न पुरस्कार 2015' से भी सम्मानित किया गया। प्रवासी लेखिका एवं पत्रकार (वसुधा, हिंदी साहित्यिक पत्रिका के संपादक व प्रकाशक) के रूप में आपका नाम 'लिम्का बुक ऑफ़ रिकॉर्ड' में भी दर्ज किया गया है। आपका हाल में प्रकाशित उपन्यास 'लोक-नायक राम' अत्यंत सराहा गया है।

साभार: द वीक्ली वॉइस

श्री जगदीप सिंह डांगी का नाम लिम्का बुक ऑफ़ रिकॉर्ड्स 2015 में

श्री जगदीप सिंह डांगी, एसोसिएट प्रोफ़ेसर, प्रौद्योगिकी अध्ययन केंद्र, भाषा विद्यापीठ, महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा का नाम लिम्का बुक ऑफ़ रिकॉर्ड्स 2015 में दर्ज किया गया है। यह सम्मान प्रो. डांगी को हिंदी के प्रथम वर्तनी परीक्षक सॉफ्टवेयर 'सक्षम' को विकसित करने पर दिया गया। इससे पहले भी आपका नाम लिम्का बुक ऑफ रिकॉर्डस 2007 में हिंदी के प्रथम इंटरनेट एक्सप्लोरर आई-ब्राउज़र++ को विकसित करने पर दर्ज किया जा चुका है। 'सक्षम' यूनिकोड समर्थित ऐसा पहला ख़ास वर्तनी परीक्षक सॉफ्टवेयर है जो यूनिकोड समर्थित एम.एस. विंडोज़ ऑपरेटिंग सिस्टम आधारित एम.एस. वर्ड के सभी ऑफ़िस संस्करणों के साथ में लिंक होकर कार्य करने में पूर्ण सक्षम है।

साभार : वैश्विक हिंदी सम्मेलन

नॉर्वे के सुरेशचंद्र शुक्ल 'शरद आलोक' पुरस्कृत

9 फरवरी, 2015 को राज्य संग्रहालय, भोपाल में सुरेशचंद्र शुक्ल 'शरद आलोक' को उनके कविता संग्रह 'गंगा से ग्लोमा तक' के लिए साहित्य अकादमी, मध्य प्रदेश द्वारा वर्ष 2011 का भवानी प्रसाद मिश्र पुरस्कार प्रदान किया गया। गत 35 वर्षों से नॉर्वे में हिंदी की पत्रिकाओं 'परिचय' (1980 से 1985 तक) तथा 1988 से 'स्पाइल-दर्पण' पत्रिका का संपादन कर रहे हैं। आप यूरोप में भारत से प्रकाशित 'राष्ट्रीय दैनिक देशबन्धु' के संपादक हैं। हिंदी में आठ कविता संग्रहों और तीन कहानी संग्रहों के रचनाकार सुरेशचंद्र शुक्ल 'शरद आलोक' ने अनेक कहानी संकलनों का संपादन किया है। नॉर्वे के प्रसिद्ध नाटककार हेनरिक इबसेन के नाटकों 'गुड़िया का घर', 'मुगार्बी' और 'समुद्र की औरत' तथा क्नुत हामसुन के उपन्यास 'भूख' के अनुवाद के साथ-साथ आपने नॉर्वेजीय लोककथाओं और डेनमार्क के विश्व प्रसिद्ध लेखक एच. सी. ऐन्डर्सन की कथाओं का भी अनुवाद मूल से हिंदी में किया है।

साभार: माया भारती की रिपोर्ट

अभ्युदय बहुउद्देशीय संस्था, वर्धा द्वारा हिंदी प्रचारकों का सम्मान

अभ्युदय बहुउद्देशीय संस्था, वर्धा द्वारा मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार तथा केंद्रीय हिंदी निदेशालय, नई दिल्ली के संयुक्त तत्वावधान में महाराष्ट्र राष्ट्रभाषा प्रचार सभा, नागपुर के सभागार में आयोजित हिंदी प्रचार कार्यकर्ता शिविर तथा हिंदी सेवी प्रचारक सम्मान समारोह में विभिन्न भाषा-भाषी व्यक्तियों को हिंदी सेवी सारस्वत प्रचारक सम्मान से सम्मानित किया गया। सम्मान पाने वालों में डॉ. रेणु बाली (नागपुर), डॉ. मृणाल मैंद (गोंदिया), डॉ. उषा साजापुरकर (नागपुर), डॉ. मधुलता व्यास (मुंबई), डॉ. अनवर अहमद सिद्दीकी, सहायक प्रोफ़ेसर, महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, डॉ. एम.एम. कडू (नागपुर), डॉ. सुहास खंडारे (वर्धा), बी.एस. मिरगे, जनसंपर्क अधिकारी, महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा, नीतू सिंह (नागपुर), सुभाष मोगरे (नागपुर), बालकृष्ण महाजन, राजभाषा अधिकारी मध्यरेल (नागपुर), सुहास खंडारे (रालेगांव), त्र्यंबक पुष्पलवार (वर्धा), विशाल चॉदवानी (नागपुर), राजेंद्र कुमार विजयवर्गीय (वर्धा), अजय वाखले (तिरोडा), श्रीमती वीणा कुंभारे (तिरोडा), विजया पांडे (आर्वी), अर्चना पुट्टेवार (नागपुर), मिनल बालपांडे (वर्धा) तथा शिवाजी वालोकार आदि शामिल हैं।

श्री बी.एस. मिरगे की रिपोर्ट

अखिल भारतीय साहित्य परिषद द्वारा सम्मान

21-22 मार्च, 2015 को कालिंद्री विहार, आगरा में अखिल भारतीय साहित्य परिषद (न्यास) की ब्रज प्रांत इकाई के दो दिवसीय अधिवेशन के दौरान सुपरिचित कुण्डलियाकार व साहित्यकार श्री त्रिलोक सिंह ठकुरेला को उनके साहित्यिक योगदान के लिए ब्रज-गौरव सम्मान प्रदान किया गया। साथ ही वरिष्ठ गीतकार श्री सोम ठाकुर को ब्रज-भूषण, डॉ.दीं मुहम्मद दीन को ब्रज-रत्न, जय सिंह नीरद को ब्रज-भारती, डॉ. भगवान प्रसाद मिश्र 'अतीत' को ब्रज-मनीषी एवं श्री संतोष कटारा को ब्रज-मार्तण्ड की उपाधि से सम्मानित किया गया।

साभार: साहित्य कुञ्ज ई-पत्रिका

सम्मान व पुरस्कार

डॉ. विनय कुमार शर्मा 'स्वर्ण पदक' से सम्मानित

19 जनवरी, 2015 को हिंदी के प्रचार-प्रसार में निरंतर रत एवं सम्प्रति एक इंटरनेशनल रिसर्च जर्नल के प्रधान संपादक, डॉ. विनय कुमार शर्मा को लखनऊ विश्वविद्यालय के दीक्षान्त समारोह में विश्वविद्यालय की सर्वोच्च उपाधी डी.लिट्. में उनके सर्वोत्कृष्ट शोध कार्य 'हिंदी का वैश्विक परिदृश्य और पाश्चात्य हिंदी सेवी संस्थाओं का योगदान' के लिए स्वर्ण पदक से सम्मानित किया गया।

साभार : युगमानस ब्लॉग

साहित्यिक महानुभावों को हिंदी कश्मिरी संगम द्वारा सम्मान

16 मार्च, 2015 को हिंदी कश्मिरी संगम के तृतीय वार्षिक अन्तरराष्ट्रीय सम्मेलन में तमिल नाडु हिंदी अकादमी, चेन्नई के अध्यक्ष डॉ. बालशोरी रेड्डी, ओड़िया-हिंदी विद्वान तथा कट्टक विश्वविद्यालय, ओड़िसा के हिंदी विभागाध्यक्ष, डॉ. स्मार प्रिया, कानपुर के पंजाबी व हिंदी विद्वान गनी दलबीर सिंह, विख्यात कश्मिरी कवि तथा ज्ञानपीठ व पद्मश्री सम्मानित प्रो. रेहमान राही, लेखक व पंजाबी-हिंदी विद्वान डॉ. महीप सिंह, प्रेमचन्द साहित्य विशेषज्ञ प्रो. कमल किशोर गोयनका, वैज्ञानिक व शब्दावली आयोग के अध्यक्ष प्रो. केशरी लाल वर्मा, साहित्य अकादमी के प्रो. मोहम्मद ज़मन अजुर्द, प्रख्यात कश्मिरी लेखक अज़ीज़ हजिनी तथा प्रसार भारती के महानिदेशक एफ़. शहर्यर को सम्मानित किया गया।

साभार : दैनिक ट्रिब्यून

काका हाथरसी हास्यरत्न सम्मान

20 फरवरी, 2015 को वर्ष 2013 तथा वर्ष 2014 का ***काका हाथरसी हास्यरत्न सम्मान*** क्रमशः प्रसिद्ध व्यंग्यकार डॉ. प्रेम जनमेजय तथा लोकप्रिय मंचीय कवि श्री सर्वेश अस्थाना को प्रदान किया गया। प्रगति मैदान में विश्व पुस्तक मेले के 'लेखक मंच' पर आयोजित इस कार्यक्रम में प्रसिद्ध विद्वान डॉ. प्रभाकर श्रोत्रिय तथा पूर्व राजनयिक श्री वीरेन्द्र गुप्त द्वारा दोनों व्यंग्यकारों को सम्मानित किया गया।

साभार: साहित्य कुञ्ज ई-पत्रिका

कृष्ण कुमार यादव 'परिकल्पना सार्क शिखर सम्मान' से सम्मानित

15-18 जनवरी, 2015 को हिंदी ब्लॉगर व साहित्यकार श्री कृष्ण कुमार यादव को भूटान की राजधानी थिम्पू में आयोजित चतुर्थ अन्तरराष्ट्रीय ब्लॉगर सम्मेलन के अन्तर्गत ***परिकल्पना सार्क शिखर सम्मान*** से सम्मानित किया गया। श्री यादव को यह सम्मान भूटान चेंबर ऑफ़ कॉमर्स एंड इंडस्ट्री के जनरल सेक्रेटरी श्री फूप श्रृंग एवं इंटरनेशनल स्कूल ऑफ़ भूटान तथा सार्क समिति ऑफ़ विमेन ऑर्गनाइज़ेशन की अध्यक्षा श्रीमती थिनले लम्हा द्वारा प्राप्त हुआ।

साभार: यदुकुल ब्लॉग

निराला स्मृति संस्थान, रायबरेली ने किया साहित्यकारों को सम्मानित

21 फरवरी, 2015 को निराला जयंती के अवसर पर निराला स्मृति संस्थान, रायबरेली द्वारा हिंदी काव्य साहित्य के क्षेत्र में उल्लेखनीय साहित्य सृजन के लिए 'जय विजय' की रचनाकार, युवा साहित्यकार और ब्लॉगर आकांक्षा यादव को ***मनोहरा देवी सम्मान***, श्री अनूप अशेष (सतना, म.प्र.) को ***निराला सम्मान***, डॉ. धनन्जय सिंह (गाजियाबाद) को ***प्रजा वत्सल राजा डालदेव स्मृति सम्मान*** एवं डॉ. संतलाल विश्वकर्मा (रायबरेली) को ***मुल्ला दाउद सम्मान*** से सम्मानित किया गया।

साभार: जय विजय वेबसाइट

संपत देवी मुरारका को 'अर्चना प्रतिभा सम्मान'

18 जनवरी, 2015 को 'अर्चना' कोलकात्ता के तत्वावधान में कोलकात्ता के निवासी श्री नथमल जी केडिया के निवास स्थान में 60 से भी अधिक वर्षों से संचालित ''अर्चना'' की मासिक गोष्ठी के अंतर्गत श्रीमती संपत देवी मुरारका (हैदराबाद) को ***अर्चना प्रतिभा सम्मान*** से सम्मानित किया गया। श्रीमती संपत देवी मुरारका भूटान के 'परिकल्पना सार्क शिखर सम्मान' से सम्मानित, लेखिका, कवयित्री, पत्रकार हैं।

श्रीमती संपत देवी मुरारका की रिपोर्ट

शब्द प्रवाह साहित्य मंच ने किया साहित्यकारों को सम्मानित

22 मार्च, 2015 को साहित्यिक संस्था शब्द प्रवाह साहित्य मंच, उज्जैन द्वारा कालिदास संस्कृत अकादमी में षष्ठम् अखिल भारतीय पुरस्कार एवं सम्मान का भव्य समारोह आयोजित किया गया। साहित्य के क्षेत्र में योगदान के लिए श्री परमानंद शर्मा को शब्द साधक सम्मान एवं डॉ. इकबाल बशर देवास को सरस्वती सिंह स्मृति सम्मान प्रदान किया गया। साथ ही साहित्य की विभिन्न विधाओं पर प्राप्त हुई पुस्तकों में से हिंदी कविता के क्षेत्र में डॉ. मृदुला झा (मुंगेर, बिहार) की कृति 'सतरंगी यादों का कारवाँ'- लघुकथा के लिए, श्रीमती ज्योति (इंदौर) की कृति 'बिजूका' एवं व्यंग्य के लिए श्री सदाशिव कौतुक (इंदौर) की कृति 'भगवान दिल्ली में' को प्रथम पुरस्कार प्रदान किया गया।

श्री संदीप सृजन की रिपोर्ट

पत्रकार तारकेश कुमार ओझा को श्रीमती लीलावती स्मृति सम्मान

28 फरवरी, 2015 को मथुरा से प्रकाशित हिंदी साप्ताहिक 'विषबाण' ने पश्चिम बंगाल के वरिष्ठ हिंदी पत्रकारों में शामिल तारकेश कुमार ओझा को ***श्रीमती लीलावती स्मृति सम्मान*** से आभूषित किया। श्री तारकेश कुमार ओझा हास्य-व्यंग्य समेत सम-सामयिक विषयों पर निरंतर लेखन कर रहे हैं। आपको उत्कृष्ट ब्लॉग लेखन के लिए भी कई पुरस्कार मिल चुके हैं।

साभार: मीडियामोरचा ब्लॉग

मुंबई में कनाडा के प्रो. सरन घई के सम्मान में काव्य-संध्या

18 जनवरी, 2015 को क्लब हाउस, पाम कोर्ट कॉम्पलैक्स, मलाड (पश्चिम), मुंबई में कनाडा के साहित्यकार व विश्व हिंदी संस्थान, कनाडा के संस्थापक प्रो. सरन घई के सम्मान में वैश्विक हिंदी सम्मेलन, मुंबई, शिवानी साहित्य मंच, मुंबई तथा शाकुंतलम के तत्वावधान में एक काव्यसंध्या का आयोजन किया गया। मुख्य अतिथि सेवानिवृत्त न्यायमूर्ती श्री राजन कोचर रहे तथा अध्यक्षता वरिष्ठ कवि खन्ना मुज़फ्फरपुरी ने की। विशेष अतिथि थे सुप्रसिद्ध हिंदी फिल्म निर्माता व राजश्री फिल्म्स के मुखिया श्री राजकुमार बड़जात्या। प्रो. सरन घई को विश्व स्तर पर हिंदी भाषा व हिंदी साहित्य के प्रचार-प्रसार में विशिष्ट योगदान के लिए 'वैश्विक हिंदी सम्मेलन' की ओर से 'वैश्विक हिंदी साहित्य-सारथी सम्मान' प्रदान किया गया। कार्यक्रम का संचालन संयुक्त रूप से डॉ. विनोद भल्ला और श्रीमती प्रमिला शर्मा ने किया और कवि सम्मेलन का संचालन डॉ. बनमाली चतुर्वेदी ने किया। काव्यपाठ में त्रिलोचन सिंह, सुनिता कुशवाहा, संतोष श्रीवास्तव, राघवेंद्र तिवारी, मुरलीधर पांडे, मनोहर अभय, नवीन चतुर्वेदी, शील निगम, लक्ष्मी यादव, डॉ. विनोद भल्ला, श्री आलोक भट्टाचार्य, श्रीमती प्रमिला शर्मा, डॉ. बनमाली चतुर्वेदी, डॉ. एम.एल. गुप्ता आदित्य, श्री मनन सिंह, प्रो. सरन घई आदि कवियों ने भाग लिया। प्रमिला शर्मा द्वारा धन्यवाद ज्ञापन हुआ।

साभार: हिंदी मीडिया.इन

श्रद्धांजलि

डॉ. कृष्णदत्त पालीवाल का निधन

8 फरवरी, 2015 को वरिष्ठ साहित्यकार और प्रखर आलोचक डॉ. कृष्णदत्त पालीवाल का 72 वर्ष की आयु में निधन हो गया। डॉ. पालीवाल हिंदी जगत में मुखर वक्ता और रचनाकारों में गिने जाते थे। आपका जन्म 4 मार्च, 1943 को सिकंदरपुर, फ़र्रुखाबाद, उत्तर प्रदेश में हुआ आप दिल्ली विश्वविद्यालय में लम्बे समय तक प्रोफ़ेसर और विभागाध्यक्ष रहे। आपकी स्मृति बहुत उर्वर थी। आपको अनेक कवियों और लेखकों के पाठ कंठस्थ थे।

आपकी मुख्य कृतियाँ हैं: भवानी प्रसाद मिश्र का काव्य-संसार, आचार्य रामचन्द्र शुक्ल का चिन्तन जगत, मैथिलीशरण गुप्त, प्रासंगिकता के अन्त:सूत्र, सुमित्रानंदन पंत, डॉ. अम्बेडकर और समाज व्यवस्था, सीय राम मय सब जग जानी, सर्वेश्वर दयाल सक्सेना, हिंदी आलोचना के नए वैचारिक सरोकार, गिरिजा कुमार माथुर, जापान में कुछ दिन, डॉ. अम्बेडकर: समाज व्यवस्था और दलित साहित्य, उत्तर-आधुनिकतावाद की ओर, अज्ञेय होने का अर्थ, उत्तर-आधुनिकतावाद और दलित साहित्य, नवजागरण और महादेवी वर्मा का रचनाकर्म, स्त्री-विमर्श के स्वर, अज्ञेय, कवि कर्म का संकट, निर्मल वर्मा।

आपको अतिविशिष्ट सम्मान, सुब्रह्मण्यम् भारती सम्मान, साहित्यकार सम्मान, दिल्ली हिंदी साहित्य सम्मेलन सम्मान, तोक्यो विदेशी अध्ययन वि. वि. जापान द्वारा प्रशस्ति पत्र, विश्व हिंदी, '8वें विश्व हिंदी सम्मेलन न्यूयॉर्क, अमेरिका में' सम्मान प्राप्त हुए हैं।

आपके निधन पर साहित्य अकादमी के अध्यक्ष विश्वनाथ प्रसाद तिवारी ने कहा कि इसी माह 4 फरवरी को साहित्य अकादमी में जयशंकर प्रसाद पर उन्होंने महत्वपूर्ण व्याख्यान दिया था। वे हिंदी साहित्य के मार्मिक पाठक और गंभीर लेखक थे।

साभार: जागरण डॉट कॉम

श्री अवध नारायण मुद्‌गल का निधन

'विश्व हिंदी समाचार' के प्रेस में चले जाने के बाद सचिवालय को यह दुखद समाचार मिला कि 15 अप्रैल, 2015 को दिल्ली में हिंदी लेखक, कहानीकार, कवि, पत्रकार, अनुवादक, संस्मरण लेखक श्री अवध नारायण मुद्‌गल जी का निधन हो गया। यह पूरे हिंदी जगत के लिए एक महान क्षति है।

आप प्रसिद्ध लेखिका श्रीमती चित्रा मुद्‌गल के पति थे। आपका जन्म 28 फ़रवरी, 1933 को उत्तर प्रदेश के आगरा के पास बाह गाँव में हुआ था। आपने आगरा विश्वविद्यालय से एम.ए. करने के बाद लखनऊ और मुंबई में कई वर्षों तक वास किया। रचनाकार के रूप में आप अपनी कहानियों के लिए विशेष चर्चित हुए। 'कवंध' आपकी चर्चित पुस्तक थी। आपकी रचनाओं का समग्र दो खण्डों में वर्ष 2008 में किताबघर प्रकाशन से छपकर आया है जिसका संपादन हिंदी के चर्चित कथाकार आलोचक महेश दर्पण ने किया है।

परंतु इन सब के अतिरिक्त आप हिंदी जगत में सर्वप्रथम एक उच्च कोटि के संपादक के रूप में पहचाने जाते हैं। आप 10 वर्षों तक प्रसिद्ध पत्रिका 'सारिका' के संपादक रहे हैं। इसके अलावा आपने 'वामा' और 'पराग' का भी संपादन किया था।

श्रीमती चित्रा मुद्‌गल की हालिया मॉरीशस यात्रा के दौरान उनसे और पूरे मुद्‌गल परिवार से जो संबंध जुड़ा उस नाते विश्व हिंदी सचिवालय परिवार स्वयं को इस पीड़ा के क्षण में मुद्‌गल परिवार के और निकट अनुभव करता है।

विश्व हिंदी सचिवालय की रिपोर्ट

प्रोफ़ेसर रविकांत दुबे के असामयिक निधन से भोजपुरी दुनिया विषाद-ग्रस्त

रविवार 15 फरवरी 2015 को भोजपुरी अकादमी के पूर्व अध्यक्ष डॉ. रविकांत दुबे जी का असामयिक निधन हुआ। वे भोजपुरी भाषा के एक बड़े योद्धा थे। उन्होंने भोजपुरी भाषा का प्रचार-प्रसार बड़ी तनमयता के साथ किया। उनको अनेक अवसरों पर अपने सेवा कार्य और देश-विदेश में भोजपुरी साहित्य एवं संस्कृति के उत्थान के लिए पुरस्कृत किया गया। आपको मॉरीशस के राष्ट्रपति महामहिम श्री. अनिरुद्ध जगन्नाथ जी द्वारा भोजपुरी गौरव सम्मान से सम्मानित भी किया गया था।

साभार : भोजपुरिका

पत्रकार सलमा ज़ैदी का निधन

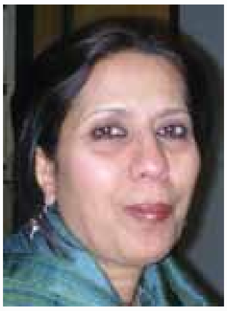

29 मार्च, 2015 को बीबीसी से लंबे समय तक जुड़ी रहीं वरिष्ठ पत्रकार सलमा ज़ैदी का लंदन में निधन हो गया। वे बीबीसी हिंदी रेडियो पर एक जानी-मानी आवाज़ थीं और हिंदी भाषा में डिजिटल दुनिया में काम कर रही चंद महिलाओं में प्रसिद्ध थीं। आपने अपनी शुरुआत बीबीसी हिंदी रेडियो से की थी। बाद में आप बीबीसी हिंदी ऑनलाइन की प्रमुख बनीं। बीबीसी में आपने महिलाओं, अल्पसंख्यकों और बच्चों से जुड़े विषयों पर विशेष काम किया।

साभार: हिंदी मीडिया डॉट इन

हिंदी विश्वविद्यालय में कथाकार, आलोचक विजय मोहन सिंह को श्रद्धांजलि

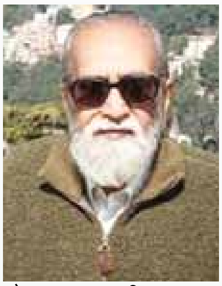

26 मार्च 2015 को हिंदी के प्रख्यात कथाकार और वरिष्ठ आलोचक विजय मोहन सिंह का दिल्ली स्थित उनके आवास पर निधन हो गया। इस दुखद समाचार से हिंदी जगत में शोक की लहर व्याप्त हो गई। उनके निधन पर महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा के प्रशासनिक भवन में कुलसचिव एवं वित्ताधिकारी संजय भास्कर गवई की अध्यक्षता में एक शोक सभा का आयोजन हुआ। शोक सभा में आवासीय लेखक मदन सोनी, कुलानुशासक प्रो. सूरज पालीवाल तथा बहुवचन के संपादक अशोक मिश्र ने विजय मोहन जी के साहित्यिक कृतियों पर प्रकाश डाला। शोक सभा में दो मिनट का मौन रखकर उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित की गई।

श्री बी.एस. मिरगे की रिपोर्ट

प्रधान संपादक
श्री गंगाधरसिंह सुखलाल
सहायक संपादक
सुश्री श्रद्धांजलि हजगैबी
संपादन सहयोग
श्रीमती विजया सरजु, सुश्री चित्रलेखा रामदोयाल, श्रीमती उषा राम, सुश्री खुशबू चुड़ामन, सुश्री करिश्मा रामझितन, सुश्री नम्रता भोला
***
विश्व हिंदी सचिवालय
स्विफ्ट लेन, फ़ॉरेस्ट साइड 74427, मॉरीशस
World Hindi Secretariat
Swift Lane, Forest Side 74427, Mauritius
फ़ोन/Phone: (230) 676 1196 * फ़ैक्स/Fax: (230) 676 1224
ईमेल/Email: info@vishwahindi.com
वेबसाइट/Website: www.vishwahindi.com
***
Printed by
BAHADOOR PRINTING LTD.
Avenue St. Vincent de Paul-Pailles
Tel: (230) 2081317

विश्व हिंदी सचिवालय तथा समस्त हिंदी जगत की ओर से स्वर्गीय महानुभावों के प्रति श्रद्धांजलि।

संपादकीय

विश्व हिंदी सचिवालय का भावी मुख्यालय

भारतीय प्रधान मंत्री महामहिम नरेंद्र मोदी जी की प्रथम मॉरीशस यात्रा के दौरान उनके और मॉरीशस के प्रधान मंत्री सर अनिरुद्ध जगन्नाथ के हाथों विश्व हिंदी सचिवालय के मुख्यालय निर्माण का आधिकारिक शुभारंभ किया जाना बहुत बड़ी बात है। कहने की आवश्यकता नहीं है कि यह इस संस्था के विकास का अगला अपरिहार्य चरण है।

विश्व हिंदी सचिवालय एक आस्था और विश्वास का प्रतीक है।

इतिहास, धर्म, जनजागरण, भाषाशास्त्र, ज्ञान-विज्ञान और साहित्य आदि में हिंदी के वैश्विक-योगियों की कर्मनिष्ठा से हज़ार वर्षों में हिंदी का एक अंतरराष्ट्रीय स्वरूप उपजा। उस स्वरूप के विस्तार और संवर्धन की संभावनाओं पर विश्वास ने विश्व हिंदी सम्मेलनों के चिंतन-मंच को जन्म दिया। उसी मंच के चिंतन और दूरदर्शिता से एक विचार उपजा कि एक ऐसा वैश्विक सचिवालय कायम किया जाए जो विश्व हिंदी की ऊर्जा के अलग-अलग तार जोड़े, भाषा प्रेम का संवर्धन करे और हिंदी को विश्व की शिखर संस्था, राष्ट्र संघ की आधिकारिक भाषा बनाने का मंच तैयार करे।

इस सचिवालय के स्थान का चुनाव भी दो देशों के बीच सांस्कृतिक, ऐतिहासिक और भाषाई संबंधों की गहराई पर अटूट विश्वास पर आधारित रहा। साथ में विश्वास था भारत के इस मित्र देश में हिंदी के निष्ठावान विद्वानों, ऐतिहासिक संस्थाओं और विश्व स्तरीय साहित्य की पूंजी पर जिसकी सराहना भारतीय प्रधान मंत्री ने अपने वक्तव्य में की। समय के साथ इस विश्वास ने प्रतिबद्धता का और प्रतिबद्धता ने देश के संविधान सभा में पारित अधिनियम का रूप लिया और सात वर्ष पूर्व सचिवालय कर्मभूमि में उतरा।

जब संस्था का जन्म कई दशकों के वैचारिक गर्भ से और वर्षों की प्रशासनिक औपचारिकताओं के प्रसव के बाद होता है और विशेषकर जब उसके साथ करोड़ों का विश्वास जुड़ा होता है तब दूध के दाँत गिरने की प्रतीक्षा कर पाना एक ऐसी विलासिता होती है जिसका वह वहन नहीं कर सकती। इसलिए सचिवालय ने आधिकारिक कार्यारंभ से ही (और कुछ हद तक उससे पूर्व ही) उपलब्ध संसाधनों का प्रयोग करते हुए ऐसी योजनाएँ बनाईं, ऐसे कार्यों को अंजाम दिया जो विश्व हिंदी समुदाय की आस्था की कसौटी पर खरा उतर सके। सात वर्षों में सात विश्व हिंदी दिवस, सात कार्यारंभ दिवस, छ: वैश्विक शोध पत्रिकाएँ, अट्ठाईस सूचनापत्र, पाँच अंतरराष्ट्रीय हिंदी प्रतियोगिताएँ, दो विश्व हिंदी सम्मेलनों और अनेक अंतरराष्ट्रीय सम्मेलनों में योगदान, पाँच अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठियाँ, दस से अधिक कार्यशालाएँ, दर्जनों वक्तव्य, कई कवि सम्मेलन और साहित्यिक आयोजन, विद्वानों का सम्मान, विदेशी भूमि पर कार्यशालाएँ, देश - विदेश की संस्थाओं का सहयोग और समन्वयन, भाषा के सभी आयामों पर चिंतन और अभिव्यक्ति और दैनिक रूप से हिंदी प्रचार।

विश्वास कीजिये, संस्था के पर आकाश छूने की इच्छा करने लगे थे लेकिन उड़ान भरने के लिए घरौंडा - वर्तमान किराए की इमारत - छोटा पड़ने लगा। इसलिए मुख्यालय निर्माणारंभ से अपने उद्देश्यों, अपनी आकांक्षाओं के प्रति नया विश्वास जागृत हुआ। तीन हज़ार वर्ग मीटर के नए भवन का हर कमरा वैश्विक संभावनाओं की ओर अनेक खिड़कियाँ खोलेगा। इसमें मानव संसाधन के लिए स्थान तो होगा ही, साहित्यिक, शैक्षणिक कार्यक्रमों के लिए अपनी छत होगी, शोध और साहित्य की विश्व पूंजी के लिए आलय होगा, विश्व के विद्वानों के लिए अध्ययन का नीड़ होगा और विश्व हिंदी के रज-रज को जोड़ने हेतु आधुनिकतम सुविधाएँ और उपकरण होंगे।

मुख्यालय निर्माणारंभ से दोनों सरकारों और अनेक नेताओं ने संस्था के प्रति अपनी आस्था का प्रमाण देने से अधिक अपने शब्दों से करोड़ों हिंदी प्रेमियों के विश्वास को संबल प्रदान किया है। श्री मोदी ने चकित करने वाली स्पष्टता से इस योजना में आई देरी की बात कही और कटिबद्धता से एलान किया कि अब जब कार्यारंभ हो रहा है तब यह भी तय कर लिया जाए कि उद्घाटन कब होगा। दूसरी ओर सर अनिरुद्ध जगन्नाथ ने विश्व हिंदी समाज की भावना का प्रतिनिधित्व करते हुए यह विश्वास दिलाया कि हिंदी को विश्व के शिखर पर पहुँचाने की हर मुहिम में भारत मॉरीशस को साथ पाएगा।

इन दोनों वक्तव्यों के समय मुझे याद आए गयाना और सूरीनाम से लेकर फ़िजी और न्यू ज़ीलैंड तक के वे प्रतिनिधि जो पिछले नवंबर महीने में सम्मेलन के लिए मॉरीशस पधारे थे। उनकी आँखों में सचिवालय के अस्तित्व के प्रति गर्व देखकर बहुत भारी ज़िम्मेदारी का अनुभव हुआ। ये प्रतिभागी भारतीय गिरमिटिया प्रवासियों की वे संतानें हैं जो चार पाँच पीढ़ियों बाद अत्यंत कठिन परिस्थितियों में अपने भाषा-संस्कृति-प्रेम मात्र के बल पर अपने देश में हिंदी को आगे बढ़ाने के लिए संपूर्ण जीवन न्योछावर कर बैठे हैं। गिरमिटिया वंशज हूँ। इस नाते दृढ़ विश्वास है कि इस भावना से बंधे हृदय विश्व स्तर पर हिंदी के पक्ष में किए जा रहे प्रत्येक कार्य को असीम आस्था से देखते हैं। वही आस्था पाई है अमेरिका, कनाडा, इंग्लैंड, ऑस्ट्रेलिया आदि के उन नए प्रवासियों के बीच जिनमें देश से दूर देश को जीवित रखने के लिए भाषा की अनिवार्यता की समझ देखी हैं। इनकी आस्था और उससे उत्पन्न निष्ठा का कोई उपमान है ही नहीं। (इसी लिए शायद आजकल अंतरराष्ट्रीय हिंदी सम्मेलनों के कुछ व्यापारी इनकी इस भोली श्रद्धा का फ़ायदा भी उठाने लगे हैं।)

यह इनके विश्वास का ही फल है कि आज हिंदी का अंतरराष्ट्रीय स्वरूप एक विस्तृत अभियान का रूप धारण करता जा रहा है। सचिवालय के उद्देश्यों की तर्ज़ पर अमेरीकी महाद्वीप के लिए एक हिंदी केंद्र की स्थापना के निर्णय की सूचना अभी-अभी मिली और इधर प्रशांत महासागरीय क्षेत्र के लिए समन्वयन केंद्र की स्थापना का विचार भी पूरे जोश के साथ उभर रहा है। इन सब के बीच सचिवालय को हिंदी का विश्वदूत होने का बहुत ही बड़ा उत्तरदायित्व निभाना है। उस दिशा में आस्था और विश्वास को अनिवार्यता है उचित संसाधन की। यह मुख्यालय उसी आस्था और विश्वास के समतुल्य सार्थक कर्म का मंच होगा। इसलिए औपचारिकताओं से परे यह संपादकीय हृदय की गहराइयों से अभिव्यक्त धन्यवाद है। यह धन्यवाद देय है, विश्व हिंदी समाज का उन सभी के प्रति जिन्होंने 1975 से आज तक एक विचार बिंदु से लेकर एक साकार योजना तक विश्व हिंदी सचिवालय पर विश्वास किया और अब इसको अगले चरण तक पहुँचाने के लिए कटिबद्धता के साथ आगे आए हैं।

उन सभी का, विश्वास के लिए और विश्वास के साथ ... धन्यवाद।

गंगाधरसिंह सुखलाल 'गुलशन'
कार्यवाहक महासचिव

सूचना

'विश्व हिंदी पत्रिका 2015'
के लिए आलेख आमंत्रित

पत्रिका के 7वे अंक के प्रकाशन का कार्य शुरू हो चुका है।
पत्रिका के पिछले सभी अंक सचिवालय के वेबसाइट www.vishwahindi.com पर उपलब्ध हैं।
लेख प्रकाशन संबंधी नियम व शर्तें तथा अधिक जानकारी के लिए इमेल, फ़ोन अथवा फ़ैक्स द्वारा संपर्क करें।